Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ

(सूरतुल बक़रा आयत :84)

तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करोगे और माता पिता से एहसान का बर्ताव करोगे और निकट सम्बन्धियों से यतीमों से और मिसकीनों से।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 9

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

1 मार्च 2018 ई. 12 जमादी उस्सानी 1439 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

क़ुदरत और रहमत का निशान तुझे दिया जाता है

फ़ज़ल और इहसान का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और फतह और ज़फर की कलीद (चाबी) तुझे मिलती है मुबारक वह जो आसमान से आता है

फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)

مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاء كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاء

(मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् हक़्क़े वल् अलाऐ कअन्नल्लाह नज़्ज़ल मिनस्समाइ)

पेशगोई हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि.

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीहे मौऊद व महदी मौऊद अ.स. "मुस्लेह मौऊद" (अर्थात् दूसरे ख़लीफ़ा एवं अपने सपुत्र हज़र मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब) के बारे में अज़ीमुश्शान पेशगोई (महत्त्वपूर्ण भविष्यवाणी) का वर्णन करते हुए फ़र्माते हैं :-

"ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है जल्ला शानुहू व अ़ज़्ज़ इस्मुहू - जिसकी शान प्रतापी है और उसका नाम इ़ज़्ज़त वाला है। मुझको अपने इलहाम (वाणी) से संबोधित करके फ़र्माया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र (होशियारपुर और लुधियाना) को तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान दिया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ़्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। खुदा ने यह कहा ताकि वह जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये। अत: लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुशखबरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़स अर्थात्(मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके अर्थ समझ में नहीं आए) दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)। مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَ الْعُلَاء كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاء मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् हक़्क़े वल् अलाऐ कअन्नल्लाह नज़्ज़ल मिनस्समाइ

अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो।

जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर। जिसको खूदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी आत्मा डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत(प्रसिद्ध) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अम्रम् मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।

(इश्तिहार 20 फ़रवरी 1886, पृ. 3)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

पेशगोई मुस्लेह मौऊद में वर्णन किए गए कुछ निशानों की व्याख्या

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़

(हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने 20 फरवरी 2015 ई को पेशगोई मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के अन्हो के बारे में विस्तार से वर्णन किया था उस का कुछ भाग पाठकों के लिए प्रस्तुत है। सम्पादक)

हुज़ूर अनवर ने फरमाया

"20 फरवरी का दिन जमाअत अहमदिया में पेशगोई (भविष्यवाणी)मुस्लेह मौऊद के बारे में जाना जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए अल्लाह तआला से निशान मांगा था क्योंकि ग़ैर मुसलमानों के इस्लाम पर हमले चर्म पर पुहुंच चुके थे। इसलिए आप अलैहिस्सलाम ने चिल्ला कशी फ़र्माई और अल्लाह तआला ने असाधारण निशान की स्वीकृति दुआ के फलस्वरूप आप को ख़बर दी।

आज मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह अन्हो के अपने शब्दों में पेशगोई के बारे में जो आप ने विभिन्न अवसरों पर फर्माया, वह आपके सामने रखूंगा। सभी पक्षों को तो वर्णन नहीं किया जा सकता कुछ बातें, कुछ उद्धरण प्रस्तुत करूंगा।

पेशगोई मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि

1944 ई. में पेशगोई मुस्लेह मौऊद की पृष्ठभूमि बताते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने फर्माया कि "आज से पूरे 58 साल पहले जिस को 59 वां साल शुरू हो रहा है 20 फरवरी के दिन 1886 ई में (यह होशियार पुर का भाषण है) कि होशियार पुर में इस मकान में जो मेरी उंगली के सामने है। (जहाँ आप भाषण फर्मा रहे थे सामने ही मकान था।) एक ऐसा मकान था जो उस समय "तवैला" कहलाता था जिसके अर्थ यह है कि वह आवास का वास्तविक स्थान नहीं था बल्कि एक रईस के अधिक मकानों में से एक मकान था। जिसमें शायद ग़लती से कोई मेहमान ठहर जाता हो या वहां उन्होंने स्टोर बना रखा हो या आवश्यकता अनुसार जानवर बांधे जाते हों। क़ादियान का एक गुमनाम व्यक्ति जिस को ख़ुद क़ादियान के लोग भी पूरी तरह नहीं जानते थे लोगों के इस विरोध को देखकर जो इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक से वे करते थे। अपने ख़ुदा के समक्ष अलग हो कर होशियार पूर में इबादत और उसकी सहायता और समर्थन का निशान मांगने के लिए आया और चालीस दिन लोगों से अलग रहकर उसने अपने ख़ुदा से दुआएं मांगी। चालीस दिन की दुआओं के बाद ख़ुदा ने उसे एक निशान दिया। वह निशान यह था कि मैं न केवल इन वादों को जो मैंने तुम्हारे साथ किया है पूरा करूंगा और तुम्हारे नाम को दुनिया के किनारों तक पहुँचाउंगा बल्कि इस वादे को ज्यादा शान के साथ पूरा करने के लिए मैं तुम्हें एक बेटा दूंगा जो कुछ विशेष गुणों वाला होगा। वह इस्लाम को दुनिया के किनारों तक फैलाएगा। इलाही कलाम के मआरिफ़ लोगों को समझाऐगा। रहमत और फज़ल का निशान होगा और वह धार्मिक और सांसारिक ज्ञान जो इस्लाम के प्रकाशन के लिए आवश्यक हैं उसे प्रदान किए जाएंगे। इसी तरह अल्लाह तआला उसको दीर्घायु प्रदान करेगा यहां तक कि वह दुनिया के किनारों तक प्रतिष्ठा पाएगा।

(उद्धरित दावा मुस्लेह मौऊद के बारे में शौकत पूर्ण घोषणा, अन्वारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 146-147)

फिर आप एक जगह फ़र्माया कि सिलसिला के दुश्मन यह आपत्ति करते रहते हैं कि जब यह इश्तेहार प्रकाशित हुआ। पेशगोई का पूरा हवाला नहीं दिया गया, शब्द नहीं पढ़े गए पहले कुछ बातें वर्णन हुई हैं। पहले तो आपने फ़र्माया कि जब यह इश्तिहार प्रकाशित हुआ तो दुश्मन ने उस पर भी आपत्ति की एक श्रृंखला शुरू कर दिया। तब 22 मार्च 1886 ई. को आप ने एक और इश्तेहार प्रकाशित फर्माया। दुश्मनों ने आपत्ति यह की थी कि ऐसी पेशगोई का क्या भरोसा किया जा सकता है कि मेरे हाँ एक लड़का पैदा होगा। क्या हमेशा लोगों के यहां लड़के पैदा नहीं हुआ करते ? संजोग के रूप में ही कोई ऐसा व्यक्ति होता है जिसका कोई लड़का न हो या जिसके यहां लड़कियां ही लड़कियां हूँ वरना आमतौर पर लोगों के यहां लड़के पैदा होते रहते हैं और कभी उनके जन्म को कोई खास संकेत नहीं ठहराया जाता। इसलिए यदि आप के यहां भी कोई लड़का पैदा हो जाए तो इससे यह कैसे साबित हो गया कि दुनिया में इस माध्यम से ख़ुदा तआला का कोई विशेष चिन्ह प्रकट हुआ है। आप ने लोगों की इस आपत्ति का जवाब देते हुए 22 मार्च के इश्तेहार में फर्माया कि यह केवल पेशगोई ही नहीं बल्कि एक भव्य आसमानी निशान है जिसे दयालु ख़ुदा ने हमारे रऊफ (दयालु) , रहीम नबी मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई और महिमा प्रदर्शित करने के लिए प्रकट किया। फिर इसी इश्तेहार में आप ने लिखा कि "अल्लाह तआला की कृपा तथा उपकार से हज़रत ख़ातमुल अन्नबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस विनीत की दुआ स्वीकार कर के ऐसी बरकतों वाली रूह भेजने का वादा किया है जिसकी प्रत्यक्ष और प्रकट बरकतें सारी पृथ्वी पर फैलेंगी। बात यह है कि अगर आप अपने यहां केवल एक बेटा होने की ख़बर देते तब भी यह ख़बर अपनी हस्ती में एक पेशगोई होती क्योंकि दुनिया में एक हिस्सा चाहे वह कितना ही कम क्यों न हो फिर भी ऐसे लोगों का होता है जिनके यहां औलाद नहीं होती और दूसरे आप ने जब यह घोषणा की उस समय आपकी उम्र पचास साल से ऊपर थी और हज़ारों हज़ार लोग दुनिया में ऐसे होते हैं जिनके यहां पचास साल के बाद बच्चों के जन्म का सिलसिला बंद हो जाता है और फिर ऐसे भी होते हैं जिनके हां केवल लड़कियां ही लड़कियां पैदा होती हैं और फिर ऐसे भी होते हैं जिनके हां लड़के तो पैदा होते हैं मगर पैदा होने के थोड़े समय बाद मर जाते हैं और ये सारे संदेह इस जगह मौजूद थे। इसलिए पहले तो किसी लड़के के जन्म की ख़बर देना किसी व्यक्ति की ताकत में नहीं हो सकता लेकिन पतन के रूप में इस आपत्ति को स्वीकार करके कहते हैं कि अगर मान भी लिया जाए कि मात्र किसी लड़के के जन्म की ख़बर देना पेशगोई नहीं कहला सकता तो सवाल यह है कि मैं केवल एक लड़के के जन्म की कब ख़बर दी है? मैंने यह तो नहीं कहा कि मेरे हाँ एक लड़का पैदा होगा बल्कि मैंने यह कहा है कि ख़ुदा तआला ने मेरी दुआओं को स्वीकार फर्मा कर एक बरकतों वाली रूह भेजने का वादा फ़र्माया है जिसकी प्रत्यक्ष और स्पष्ट बरकतें पृथ्वी पर फैलेंगी।

(उद्धरित अल्मौऊद, अन्वारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 529-530)

इसलिए यह इस इलहाम का खुलासा था कि कैसे हज़रत मुस्लेह मौऊद की बरकतें, यह सारी बातें फैंलीं। मैं इसके विस्तार में नहीं जा रहा। आगे कुछ वर्णन भी होगा।

मुस्लेह मौऊद अलैहिस्सलाम तीन चार सौ साल बाद पैदा होना चाहिए था।

फिर इस बात की ओर ध्यान दिलाते हुए कि कुछ लोग आपत्ति करते हैं, उस युग में भी यह आपत्ति थी बल्कि बाद में कहीं तीन चार सौ साल बाद या सौ साल या दो सौ साल बाद मुस्लेह मौऊद पैदा होगा। आप फर्माते हैं "कुछ लोग कहते हैं कि मुस्लेह मौऊद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किसी भावी पीढ़ी से तीन चार सौ साल बाद आएगा। वर्तमान ज़माने में नहीं आ सकता लेकिन उनमें से कोई व्यक्ति ख़ुदा का भय नहीं करता कि वह पेशगोई के शब्दों को देखे और उन पर विचार करे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तो लिखते हैं। इस समय इस्लाम पर आरोप किया जाता है कि इस्लाम अपने अंदर निशान प्रकट करने की कोई शक्ति नहीं है। इसलिए पंडित लेखराम आपत्ति कर रहा था कि अगर इस्लाम सच्चा है तो निशान दिखाया जाए। इन्द्रमन आपत्ति कर रहा था कि अगर इस्लाम सच्चा है तो निशान दिखाया जाए। आप अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हैं और कहते हैं कि हे ख़ुदा ! तू ऐसा निशान दिखा जो चिन्ह मांगाने वालों को इस्लाम का कायल कर दे तू ऐसा निशान दिखाना जो इन्द्रमन मुरादाबादी आदि को इस्लाम का कायल कर दे और यह आलोचक हमें बताते हैं कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के सामने यह दुआ की तो ख़ुदा तआला ने आपको यह ख़बर दी कि आज से तीन सौ साल के बाद हम तुम्हें एक बेटा प्रदान करेंगे जो इस्लाम की सत्यता का निशान होगा। दुनिया में कोई भी व्यक्ति जो इस बात को उचित ठहरा सकता है। यह ऐसी ही बात है जैसे कोई व्यक्ति सख्त प्यासा हो और किसी के दरवाज़े पर जाए और कहे भाई मुझे सख्त प्यास लगी हुई है। ख़ुदा के लिए मुझे पानी पिलाओ और वह आगे से यह जवाब दे कि साहब आप घबराएँ नहीं मैंने अमेरिका पत्र लिखा है वहां से इसी साल के अंत तक एक उन्नत एसनस (essence) आ जाएगा और अगले साल आप को शर्बत बनाकर पिला दिया जाए जाएगा। कोई पागल से पागल भी ऐसी बात नहीं कर सकता। कोई पागल से पागल भी ऐसी बात ख़ुदा

पृष्ठ 8 पर शेष

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह तआला का हम अहमदियों पर बड़ा फज़्ल है कि हमारे अक्सर छोटे बड़े इस बात को समझते हैं कि अगर व्याकुल होकर विनम्रता से अल्लाह तआला के आगे झुका जाए और उस से दुआ मांगी जाए तो अल्लाह तआला दुआओं को सुनता है और कई बाद दुआ का कुबूलियत की इस प्रकार की घटनाएं होती हैं जो दूसरों को हैरत में डाल देती हैं।

दुनिया के विभिन्न देशों से संबंधित अहमदियों की दुआओं की कूबूलियत के विभिन्न ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

पाकिस्तान के मुल्लाओं के दिल ख़ुदा तआला के भय से ख़ाली हैं, जो ख़ुदा तआला के नाम पर उस के आदेशों का उलंघन करते हैं।

और यही लोग हैं, जिन्होंने क़ौम में भी बिगाड़ पैदा किया है अल्लाह तआला क़ौम पर रहम करे और इन ज़ालिमों से क़ौम का शीघ्र छुड़ाए ।

मुकर्रम चौधरी नसीमुल्ला साही साहिब (पूर्व नाज़िम संपत्ति सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान) और मुकर्रम ज़फरुल्लाह ख़ान बुट्टर (ऑफ करतू शेखूपुरा, पाकिस्तान) की वफात, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 जनवरी 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर दुआ की फिलासफी बयान करते हुए फरमाया:-

"एक बच्चा जब भूख से बेताब होकर दूध के लिए चिल्लाता है तो माँ की छाती में दूध जोश मार कर आ जाता है। बच्चा दुआ का नाम भी नहीं जनता लेकिन उसकी चीखे दूध को कैसे खींच लाती हैं? फरमाया कि कभी कभी देखा गया है कि माएँ दूध को महसूस भी नहीं करतीं लेकिन बच्चे की चिल्लाहट दूध को खींच लाती है। तो क्या हमारी चीखें जब अल्लाह तआला के समक्ष हों तो वे कुछ भी खींच कर नहीं ला सकतीं। आता है और सब कुछ आता है मगर जो आँखों के अंधे विद्वान और फिलासफर बने बैठे हैं वे देख नहीं सकते। आप ने फरमाया कि बच्चे को जो संबंध माँ से है उस संबंध और रिश्ते को इन्सान दिमाग में रख कर अगर दुआ की फिलासफी पर विचार करे तो वह बहुत सरल मालूम होती है।"

(मल्फूज़त जिल्द प्रथम पृष्ठ 129, एडिशन 1985 लन्दन)

अल्लाह तआला का हम अहमदियों पर बड़ा फज़्ल है कि हमारे अक्सर छोटे बड़े इस बात को समझते हैं कि अगर बेताब होकर, गिड़गिड़ा कर विनम्रता से अल्लाह के सामने झुका जाए और उससे दुआ मांगी जाए तो अल्लाह दुआ को सुनता है। और कभी-कभी दुआ की कुबूलियत के ऐसे वाकियात होते हैं जो गैर-लोगों को आश्चर्यचकित करते हैं। कई लोग मुझे लिखते हैं कि कुछ बार ऐसी निराशा की स्थिति हो जाती है और कैसे हर तरफ से निराश हो जाते हैं उस समय जब हम अल्लाह के आगे झुके तो अल्लाह तआला ने फज़्ल फ़रमाया जो हमारे ईमानों में मजबूती का कारण बना। मैं कुछ ऐसी घटनाएं पेश करूंगा जो अलग-अलग रिपोर्टों में आती हैं।

नाज़िर दावत-ए-इलल्लाह कादियान लिखते हैं कि जिला होशियारपुर के अमीर ने बताया कि कुछ साल पहले उनके गांव खेड़ा अछरवाल में बारिश न होने की वजह से गांव वाले बहुत परेशान थे यहां तक कि कुओं का पानी भी निचली सीमा तक पहुँच गया था। हिंदू बहुमत ने के मुअल्लिम से दुआ करने के लिए कहा। पूर्वी पंजाब में, मुअल्लिम को मौलवी को 'मियां जी' कहते हैं। उनका मानना था कि अहमदी मुअल्लिम को दुआ करने के लिए कहेंगे, तो निश्चित रूप से बारिश होगी। हालांकि, हमारे मुअल्लिम ने पहले उन्हें इस्लामिक दुआ के बारे में बताया और अल्लाह की सिफात का बताया। फिर दुआ करवाई। वे कहते हैं कि अल्लाह ने जमाअत अहमदिया के इस मुअल्लिम की दुआ को स्वीकार किया और अपनी कृपा से दो तीन घंटे के अंदर मूसलाधार बारिश बरसा दी और अपने "दुआओं का सुनने वाला" होने का सबूत दिया। इस घटना का अल्लाह तआला के फज़्ल से पूरे गांव पर अच्छा असर हुआ, और ग्रामीणों ने कहा कि अहमदियों की दुआओं के कारण बारिश हुई थी।

फिर इसी प्रकार फिजी द्वीप के अमीर साहिब ने लिकहते हैं कि तवालौ फ़िजी के पास एक छोटा सा द्वीप है। इस दौरे पर जाने से पहले, तवालौ के मुबल्लिग़ ने बताया कि यहाँ एक लम्बे समय से बारिश नहीं हुई है और पानी का दारोमदार बारिश पर है। इसलिए दौरे पर जाने से पहले, उन्होंने मुझे भी दुआ करने के लिए एक पत्र लिखा कि बारिश के लिए दुआ करें। जब हम शाम से समय तवालौ पहुंचे, तो वहां लोगों ने बहुत सारी समस्याओं का उल्लेख किया कि अब पानी सूख रहा है। वे कहते हैं कि उसी रात मैंने इशा की नमाज़ में ऐलान किया कि हम नमाज़ का जो अंतिम सज्दा करेंगे उसमें बारिश के लिए दुआ करेंगे। अत:अल्लाह ने यह दुआ स्वीकार कर ली और यह अल्लाह तआला की रहमत की बारिश हुई, और अल्लाह तआला के फज़्ल से तब से तीन चार बार बारिश हो चुकी है जबकि मौसम का विभाग की ओर से एक लंबे समय के लिए शुष्क मौसम की भविष्यवाणी थी।

कहते हैं उसके बाद हम जहाँ भी गए लोगों ने इस बात का इज़हार किया कि आपके आने पर यहाँ बारिश हुई है। अत: कैथोलिक चर्च के एक बिशप और फोन फोती कबीले के एक प्रमुख ने यह भी व्यक्त किया कि यह केवल अल्लाह तआला का फज़्ल है और आपके खलीफा की दुआ है, जो यहाँ असामान्य रूप से बारिश हुई और यह बारिश न केवल अहमदियों के लिए ईमान में वृद्धि का कारण बनी बल्कि ग़ैर अहमदियों के लिए भी मसीह मौऊद अल्लैहिस्स्लम की सच्चाई का निशान बनी।

किसी किसी जगह बारिश का होना ख़ुदा तआला की सहायता और कुबूलियत का निशान बन जाता है यो किसी जगह बारिश का रुकना कुबूलियत दुआ का निशान बन जाता है और ग़ैर चाहे इस्लाम को क़ुबूल करें या न करें लेकिन इस

बात को अवश्य मानते हैं कि इस्लाम का ख़ुदा दुआओं को सुनने वाला ख़ुदा है।

गनी बसाओ अफ्रीका का एक देश है वज्हन के मुअल्लिम अब्दुल्लाह साहिब हैं। कहते हैं हम एक गाँव सिन्चांग काम्सा तब्लीग़ के लिए गए और लोगों को एकत्र करके जमाअत अहमदिया का पैगाम पहुँचाया, जब उन्हें तबलीग की जा रही थी तो उसी समय भीषण बारिश शुरू हो गई और यह कहते हैं कि बारिश के शोर के कारण मेरी आवाज़ लोगों तक नहीं पहुँच रही थी। और ऐसा लग रहा था कि अभी लोग उठ कर चले जाएँगे और लोग परेशान हो रहे थे और जाने वाले थे तो कहते हैं कि उस समय मैंने दुआ की कि हे अल्लाह! बारिश भी तेरी और जो पैगाम मैं लेकर आया हो वह पैगाम भी तेरा लेकिन बारिश के कारण यह लोग तेरा यह पैगाम सुन नहीं रहे हैं और उठने वाले हैं। कहते हैं कि अभी दुआ करने की देर ही थी अल्लाह तआला ने बारिश को रोक दिया और फिर वहां मौजूद लगभग 150 लोगों को तबलीग़ की गई। और कहते हैं कि अल्हम्दुलिल्लाह तब्लीग़ के बाद वहां मौजूद सब लोगों ने बैत कर ली।

दुआ के बाद बरिश के रुकने ने जहाँ हमारे मुअल्लिम के ईमान को मज़बूत किया वहां उन लोगों को दुआओं को सुनने वाला ख़ुदा भी दिखाया। लोग काहत हैं कि ख़ुदा किस प्रकार नज़र आता है? ख़ुदा इसी प्रकार अपनी कुद्रतों को दिखा कर नज़र आता है। wahi लोग जो बारिश कि वजह से वहां से उठ कर जाने वाले थे वे अल्लाह तआला के इस फज़ल को देख कर न केवास्ल बैठे रहे बल्कि अहमदिया और वास्तविक इस्लाम को स्वीकार किया।

इसी प्रकार बांदोंदा के मुबल्लिग़ हाफिज़ मुज़म्मिल साहिब हैं वे कहते हैं कि मैं लोकल मुअल्लिम और दो ख़ुद्दाम के साथ एक एक गाँव के दौरे पर रवाना हुआ रास्ते में भीषण बारिश शुरू हो गई आगे जाना नामुमकिन नज़र आता था क्योंकि रास्ता कच्चा और फिसलन बहुत थी। अत: हम एक स्थान पर रुक गए और दुआ की कि हे अल्लाह हम तेरे मसीह का पैगाम पहुँचाने जा रहे हैं। वहां पहले से सूचन की हुई थ ओर लोग वहां इकट्ठे थे, तू फज़ल कर ताकि रास्ते की हर रुकावट दूर हो जाए। कहते हैं कि अल्लाह तआला ने उसी समय हमारी दुआ सुन ली। और बारिश उसी समय रुक गई क्योंकि बज़ाहिर ऐसा लगता था कि बारिश शाम तक चलेगी। इसलिए हम बहुत परेशान थे। लेकिन अल्लाह तआला ने फज़ल फ़रमाया और प्रोग्राम के अनुसार सही समय पर गाँव पहुंचे और तबलीग़ी और तरबियती प्रोगामों का आयोजन किया।

फिर दुआ के द्वारा बारिश रीकने के बारे में वह्हाब तय्यब साहिब जो स्वी-ज़रलैंड के मुबल्लिग़ हैं वे लिखते हैं जमाअत ने ज़ख्विल के इलाक़े में मस्जिद बनाने के लिए ज़मीन खरीदी। वहां अमन की निशानी के लिए एक पौधा लगाने के उद्देश्य से एक प्रोग्राम रखा गया जिसमें दूसरे महमानों को भी आमंत्रित किया गया। जिस दिन पौधा लगाने का प्रोग्राम था उस दिन (मौसम विभाग की) भवि-ष्यवाणी के अनुसार भीषण बारिश होनी थी। क्योंकि प्रोग्राम की समस्त कार्यवाही खुले में थी इसलिए उनको बड़ी परेशानी थी। इस हवाले से उन्होंने मुझे भी लिखा और उनके काफी पत्र आते रहे। कहते हैं कि प्रोग्राम वाले दिन जब वे वहां गए तो पहले तेज़ बारिश शुरू हो गई और सामान्यत: बारिश रुकने के कोई लक्षण नज़र नहीं आ रहे थे मगर फिर दुआओं के द्वारा अल्लाह तआला ने फज़ल फ़रमाया और अभी प्रोग्राम शुरू होने में एक घंटा शेष था कि बारिश पूर्णत: रुक गई और सूर्य निकल आया। कहते हैं कि प्रोग्राम में मुक़ामी काउन्सिल के सदर भी आए हुए थे। उन्होंने सबसे तो बड़ी हैरानी के साथ यही कहा कि आपने प्रोग्राम के लिए मौसम भी आर्डर करवाया हुआ है? इस पर उन्हें बताया गया कि हम दुआ भी करते हैं और अपने ख़लीफा को भी दुआ के लिए लिखा और हमें पूरी आशा थी कि अल्लाह तआला फज़ल करेगाऔर इस प्रकार यह प्रोग्राम सफल रहा जिसकी ख़बर वहां के लोकल अखबारों ने भी दी। और इसके द्वारा काफी लोगों को जमाअत का परिचय हुआ। बेशक हम मौसम को आर्डर तो नहीं करते हैं और न कर सकते हैं लेकिन उस ख़ुदा के समक्ष अवश्य झुकते हैं जिसके आदेश के अधीन मौसम है और फिर वही अपनी कुदरत के नज़ारे दिखाता है।

अब मौसम से हट कर कुछ और कुबूलियत दुआ की घटनाएँ हैं उनका वर्णन करता हूँ। हमारा ख़ुदा केवल मौसमों का ख़ुदा नहीं है बल्कि सर्वशक्तिमान और हर प्रकार की दुआओं को सुनने वाला ख़ुदा है। उसकी अनंत सिफात (विशेषताएँ) हैं और अपनी सिफात के वह जलवे (चमत्कार) दिखाता है।

बेनिन से मुअल्लिम सिलसिला मतीन साहिब कहते हैं कि कुछ दिन पूर्व एक नई बैत किए हुए अहमदी दोस्त आए कि मौलवी साहिब हमारे घर आएं। उसने बताया कि मेंरी पत्नी की हालत बहुत ख़राब है। तो कहते हैं इस बात पर मैं अपनी पत्नी को लेकर उनके घर चला गया क्योंकि उनकी पत्नी का प्रसव का मामला था इसलिए औरत की आवश्यकता थी ओर समय बिल्कुल निकट था और उसको बहुत तेज़ बुखार था और तेज़ बुखार के कारण बच्चे-दानी के सिकुड़ जाने से बच्चे का जन्म नहीं हो पा रहा था। वह कहने लगा कि पहले भी दो बार ऐसा ही हो चूका है जिस में या तो बच्चा बच सकता था या माँ। अत: दोनों बार उन्होंने माँ को बचाने की कोशिश की और औलाद कि कुर्बानी देनी पड़ी और अब यह तीसरी बार ऐसा हो रहा है। मुअल्लिम साहिब ने कहा कि ऐसी हालत में हम दवा के साथ दुआ भी करते हैं और अपने इमाम को भी दुआ के लिए लिखते हैं लेकिन अब तो यहाँ इतना समय नहीं है। दुआ को सामान्य तरीका है वह तो करेंगे ही और लिखने का समय नहीं। अत: कहते हैं मैंने अल्लाह तआला के पवित्र नामों का वास्ता देकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वास्ता देकर दुआ करनी शुरू की और दुआ ख़तम करने पर सुरह फ़ातिहा पढ़ कर पानी पर फूँका और उस औरत को पिलाया। कहते हैं कि इस प्रकार मैंने दो तीन बार किया और पानी फूँक कर उस औरत को भिजवाया। तीसरी बार उसका पति ख़ुशी से आया कि अल्लाह तआला ने मेंरी पत्नी भी बचा ली और बेटा भी दे दिया। और इस नए अहमदी का ईमान अल्लाह तआला के फज़ल से अल्लाह तआला पर और भी बढ़ गया और दुआ पर ईमान अधिक मज़बूत हुआ। और तब से यह स्वयं भी निरंतर ध्यानपूर्वक, विनम्रता से, आजिज़ी से तड़प के साथ दुआएँ करने लग गया।

इसी प्रकार एक बीमार का वर्णन करते हुए कीनिया के अमीर साहिब लिखते हैं कि वहां की एक जमाअत के सदर साहिब बहुत बीमार थे। उनका हल चल पुछा गया तो कहने लगे कि मुझे दो हस्पतालों से जवाब दे दिया गया है और अब मेरी हालत बहुत ख़राब है किसी समय भी आप कोई बुरी ख़बर सुन सकते हैं। उनकी चमड़ी का रंग भी बिल्कुल बदल चुका था और शरीर भी पूर्णत: ठंडा और बेजान महसूस होता था। उन्हें सांत्वना दी कि आप हिम्मत न हारें खुद भी दुआ करें और मुअल्लिम कहते हैं कि उन्होंने मुझे भी यहाँ पत्र लिखा। मुअल्लिम कहते हैं कि एक हफ्ते बाद जब मैं दोबारा उस जमाअत में नमाज़ जुमा पढ़ाने गया तो मैंने देखा कि उनकी हालत बेहतर है और कुछ दिनों बाद यहाँ से मेरा उत्तर भी उनको मिल गया कि अल्लाह तआला पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करेगा इंशा अल्लाह। इसके बाद कहते कि अल्लाह तआला के फज़ल से उनकी सेहत निरंतर बेहतर होती गई। और अब कुछ दिनों के बाद वह बिल्कुल स्वस्थ हो गए और अपना काम काज कर रहे हैं। अत: दुआ से उन्हें अल्लाह तआला के फज़ल से एक नया जीवन मिला और इस ने भी उनके ईमान को बढ़ाया।

फिर कर्नाटक इण्डिया से वहां के अमीर ज़िला लिखते हैं वहां की एक जमाअत के सदर जमाअत लिखते हैं कि उनको ब्रेन ट्यूमर हो गया और हस्प-ताल में भरती हो गए वहां के डाक्टरों के कहा कि उनका इलाज मुमकिन नहीं है। ऑपरेशन करते समय जान भी जा सकती है उन्होंने तत्काल दुआ के लिए मुझे भी यहाँ लिखा और मेरा उत्तर भी उनको गया कि अल्लाह तआला शिफा अता फरमाए। कहते हैं कि एक महीने के बाद डाक्टरों ने दोबारा उनका परीक्षण किया तो हैरान रह गए कि ब्रेन ट्यूमर का नाम व निशान तक नहीं है। यह केवल अल्लाह तआला का ही फज़ल था और दुआओं का ही परिणाम है कि हुसैन साहिब पूर्णत: स्वस्थ हो गए।

फिर एक मरीज़ का वर्णन है जिसके बारे में हाफिज़ एहसान सिकंदर मुबल्लिग़ बेल्जियम लिखते हैं कि एक अहमदी दोस्त दाऊद साहिब बीमार थे। हास्पिटल में भरती हो गए उनके जिगर, गुर्दे, फेफड़ों ने काम करना बंद कर दिया था हास्पि-टल में ही उन्हें दिल का दौरा भी पड़ा उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया कुछ देर बाद डाक्टरों ने जवाब दे दिया यहाँ तक की उनकी फैमिली ने जमाअत से दरखास्त भी कर दी कि जनाज़े आदि में उनकी सहायता की जाए हाफिज़ साहिब कहते हैं उन्होंने मुझे भी दुआ के लिए लिखा ख़ुद भी दुआ की जमाअत को दुआ के लिए कहा अगले दिन जमाअती लोग जिनमें सदर अंसरुल्लाह, सैक्रेटरी तबलीग़ और यह सम्मिलित थे। उनको मिलने गए तो डाक्टर कहने लगे की एक चमत्कार

हुआ है की जो दवा हम पहले उन्हें दे रहे थे और उनका शरीर उसे स्वीकार नहीं कर रहा था अब वही दवा असर कर रही है और उनकी तबियत अल्लाह के फज़ल से पहले से बेहतर हो रही है हमने डाक्टर को कहा कि यह चमत्कार दुआ की वजह से हुआ है और उसके बाद अल्लाह तआला ने उनको यह नया जीवन प्रदान किया है।

दुआ की कुबूलियत के कुछ ओर वाकियात हैं जो लोगों के लिए जमाअत और खिलाफत से संबंध और जमाअत की सच्चाई और ख़ुदा तआला पर ईमान में तरक्की का कारण बनते हैं।

मुस्तफा साहिब सऊदीया के रहने वाले हैं। कहते हैं कि मैंने आप की सेवा में दुआ का निवेदन किया था की मेरा तबादला अमुक शहर में हो जाए और इस प्रकार में फैमिली के साथ रह सकूँ। कहते हैं कि यह सामान्यता नामुमकिन था लेकिन अब दुआ से ऐसा चमत्कार हुआ है की अब तबादलों की झड़ी लग गई है और मैं तेंतीस नंबर से एक नंबर पर आ गया हूँ अर्थात अब जब भी कोई तबादला हुआ तो मुझे अवसर दिया जाएगा और मैं फैमिली के साथ रह सकूँगा। यह कहते हैं की मेरे लिए तो यह एक चमत्कार से कम नहीं है। अपने अपने हालात हर कोई जनता है समान्यत: कुछ बातें मामूली सी होती हैं लेकिन जिस पर गुज़र रही होती है उसको एहसास होता है की यह किस प्रकार की अनहोनी है की जो अल्लाह त'आला के फज़ल से और दुआओं से हो गई।

तंज़निया के रीजन मौरू गुरु के मुअल्लिम लतीफ़ साहिब एक वाकिया लिखते हैं। कहते हैं कि हमारी जमाअत की मस्जिद से किसी ने एक सोलर सिस्टम की बैटरी चुरा ली जब अगले दिन जमाअत को पता चला तो उन्होंने फैसला किया की पुलिस में रिपोर्ट करने से बेहतर है की हम अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ करें की वहाँ भी कुछ नहीं होना पुलिस ने नोट कर लेना है औए किस्सा खतम हो जाना है। तो बेहतर है हम दुआ करें। अल्लाह के सामने झुकें और उससे मांगें। हम यह दुआ करेंगे की जिसने भी बैटरी चोरी की है उसको खुद अल्लाह तआला सज़ा दे दे और हमारी बैटरी हमें लौटा दे। कहते हैं कि उस अवसर पर चोरी का सुन कर कुछ गैर अहमदी लोग भी इकट्ठे हुए थे। खैर यह बात गाँव में फ़ेल गई की अहमदियों ने दुआ की है कि जिसने भी बैटरी चोरी की है अल्लाह तआला उसको पकड़े और सज़ा दे। गैर अहमदी लोगों ने कहना भी शुरू कर दिया की अहमदियों की दुआएं बड़ी कुबूल होती हैं अब चोर अवश्य पकड़ा जाएगा क्योंकि अब उसके लिए कोई रास्ता नहीं। कहते हैं की अभी एक दिन ही गुज़रा था की जिस किसी ने भी चोरी की थी डबल्यूएच सुबह सवेरे बैटरी सदर जमाअत के घर के सामने रख गया। इस प्रकार कहते हैं की अल्लाह तआला ने अहमदियों की दुआ को सुना और गैर अहमदी अहबाब का ईमान दुआओं पर और भी पक्का हुआ की ये वास्तव में नेक और सच्चे लोग हैं

बहरहाल इससे यह तो पता चल गया कि वहाँ के चोरों में भी ख़ुदा तआला का भय है और ख़ुदा तआला के नाम से डर गए, लेकिन पाकिस्तान के मुल्लाओं के दिल ख़ुदा तआला के भय से बिलकुल खाली हैं। ख़ुदा तआला के नाम पर उसके आदेशों की अवहेलना करते हैं और यही लोग हैं जिन्होंने क़ौम में भी बिगाड़ पैदा कर दिया है। अल्लाह तआला क़ौम पर भी रहम करे और इन ज़ालिमों से क़ौम को भी जल्दी छुड़ाए।

एक वाकिया बयान करते हुए मुबल्लिग इंचार्ज साहिब गनी कुनाकरी लिखते हैं कि एक मुखलिस नए अहमदी नौजवान सुलेमान साहिब ने अपनी इच्छा का इज़हार किया कि वे वक़्फ़ करके जमाअत की सेवा करना चाहते हैं अत: हमने उन्हें सेरालियोन जामिया अहमदिया में प्रवेश लेने का परामर्श दिया जिसे उन्होंने खुशी खुशी स्वीकार कर लिया। तैयारी शुरू हो गई कहते हैं जब हमने उनके माता पिता जो अभी अहमदी नहीं हुए थे उनको मिशन हाऊस में बुलवाया ताकि उनकी स्वीकृति प्राप्त की जा सके। तो समान्यत: वे बड़े खुश हुए और तमाम मालूमात और जानकारी लेकर दो दिन बाद वापस आने का कह गए। वापस जाकर उन्होंने अपने मौलवी से मशवरा किया। उन्होंने उन्हें बहका दिया और हमारे खिलाफ पुलिस में मुक़द्दमा दायर करवा दिया कि जमाअत अहमदिया एक गैर मुस्लिम और हिंसक जमाअत है और यह लड़के को भी बहका रही है और हिंसक बना रही है। कहते हैं कि इस पर हमें बड़ी परेशानी हुई मुझे भी उन्होंने दुआ के लिए लिखा और बहरहाल मैंने भी उनको जवाब दिया कि अल्लाह फज़ल करे। कोशिश करते रहें और दुआ भी करते रहें। अत: कहते हैं कि जब पुलिस ने जांच पड़ताल की और जमाअत का परिचय उनको दिया गया तो अल्लाह तआला के फज़ल से पुलिस ने न केवल मुक़द्दमा रद्द कर दिया बाकी कहने लगा कि मुझे तो इनका बयान किया हुआ इस्लाम ज़्यादा सही और शांति प्रिय लगता है और पुलिस कमिश्नर ने कहा कि मुझे और अधिक जानकारी दें मैं भी इस जमाअत में सम्मिलित होना चाहता हूँ।

फिर एक वाक़िया माली रीजन के मुबल्लिग मुस्तनसिर साहिब लिखते हैं कि इस साल जलसा सालाना माली के लिए लोगों को तहरीक की कि अधिक से अधिक लोग सम्मिलित हों क्योंकि जहां जलसा होना था वहाँ की दूरी बहुत है लगभग चार सौ किलोमीटर। वहाँ के रहने वाले गरीब लोग हैं वहाँ जाने का इतनी दूरी तै करने का दस हज़ार फ्रांक लगता है। गरीब आदमी के लिए इतनी रक़म की व्यवस्था करना कि सारा खानदान जाए बहुत कठिन हो जाता है। तो एक मेंम्बर यहया साहिब हैं जो नदी से मछलियाँ पकड़ते हैं और बाज़ार में बेचते हैं। उन्होंने बड़े यत्न करके सारे साल में एक आदमी का किराया जमा किया था। उन्होंने कहा कि पिछले साल तो मैं गया था इस साल क्योंकि एक आदमी का किराया है इसलिए मैंने फैसला किया है कि अपनी पत्नी को जलसा पर भिजवाऊंगा। मुबल्लिग साहिब ने उन्हें कहा कि आपका इरादा तो अच्छा है लेकिन कोशिश करें कि आप भी जलसे में सम्मिलित हों और इसके लिए दुआ भी करें कि अल्लाह तआला नदी से मछली का इयसा शिकार आपको दे दे कि आपका भी किराया बन जाए। अत: जिस दिन सुबह जलसे के लिए वहाँ से काफला चलना था उससे पहली रात आठ बजे डबल्यूएच व्यक्ति मिशन में आए। उनके हाथ में लगभग 12 किलो की बहुत बड़ी मछली थी उन्होंने बताया कि जब सुबह नदी में जाल डालने गया तो मैंने बड़ी दुआ की कि कल काफला रवाना होना है और मेरे पास किराया नहीं, हे मेरे अल्लाह सहायत कर कि मैं जलसे में सम्मिलित हो सकूँ। निय्यत मेंरी नेक है। कहते हैं असर के समय जाल निकाला तो यह मछली लगी हुई थी। जब किनारे पर आया तो एक आदमी ने 18000 फ्रांक सीफा की खरीद ली। मैंने उस आदमी से आज्ञा ली है कि मैं आपको मछली दिखाऊँ तो इस मछली से मेरा किराया भी पूरा हो गया है अब हम दोनों पति पत्नी सम्मिलित हो सकते हैं और अधिक पैसे भी बच गए।

अल्लाह तआला दुआ की कुबूलियत के द्वारा किस प्रकार अहमदियों को ईमान में मज़बूती और ख़िलाफ़त पर विश्वास स्थापित करता है इस बारे अपना एक वाकिया लिखते हुए माली के एक साहिब इदरीस तरावडे साहिब कहते हैं कि 2008 ई में जब आपने घाना का दौरा किया (जब मैं 2008 ई में ख़िलाफ़त जोब्ली के जलसा में सम्मिलित हुआ था) तो उस समय यह अहमदी भी जलसा में सम्मिलित हुए थे। कहते हैं कि मैं मुर्गियों का व्यापार करता था और मुर्गियां छोड़ कर घाना चला गया। पीछे मेरी सारी मुर्गियां मर गईं। तो जिस व्यक्ति के पैसों से मैं यह व्यापार करता था उसको जब पता चला कि मैं अहमदी हूँ और अहमदियों के जलसा पर गया हूँ और मुर्गियां मर गईं हैं तो वह मुखालिफत में और भी अँधा हो गया और मेरे वापस आने के बाद मुझे पैगाम भेजा कि एक हफ्ते के अन्दर अन्दर मेरे एक लाख पचास हज़ार फ्रांक सीफा वापस करो। कहते हैं मैं बहुत परेशान हुआ मेरे पास तो रक़म नहीं है। यह मुखालिफ मुझे बहुत अपमानित करेगा। कहते हैं सारी रात मैंने बहुत दुआ की कि अल्लाह तआला मेरी कोई व्यवस्था कर दे। मैं तो ख़लीफा की मुहब्बत में जल्से में सम्मिलित होने गया था। कहते हैं मुझे स्वप्न में दिखाया गया कि एक ट्रक से कुछ अनाज गिरा हुआ है जिसे में समेट रहा हूँ। एक विशेष स्थान दिखाया गया कि वहां ट्रक है और वहां अनाज गिरा हुआ है और वहां से समेट रहा हूँ। कहते हैं कि जो स्थान दिखाया गया था मैं सुबह सुबह वहां गया तो वहां ट्रक तो कोई नहीं था लेकिन अनाज गिरा हुआ था कुछ दाने गिरे हुए थे जो मैं समेटने लगा तो अचानक एक काले रंग का प्लास्टिक का लिफाफा मिला उसको खोला तो उसमें एक लाख अस्सी हज़ार फ्रांक सीफा थे। मैंने वहां इलाक़े के लोगों से पूछा तो बताया गया कि कल रात यहाँ एक ट्रक खड़ा हुआ था जो अब सेनेगाल की ओर चला गया है। मैंने लोगों से कहा कि मुझे यहाँ यह रक़म मिली है अगर किसी की हो तो बता के लेले। कोई आदमी नहीं आया। बहर्हार जब शाम को कर्ज़ मांगने वाला पैसे लेने आया और फिर अपमानित करने पर उतर आया तो मैंने कहा कि सब्र करो मैं तुम्हें क़र्ज़ दे देता हूँ मेरा अल्लाह तआला ने प्रबंध कर दिया है और मैंने उसकी वह रक़म वापस कर दी। कहते हैं अब कई साल हो गए हैं लेकिन इस रक़म के मालिक होने का वहां किसी ने दावा नहीं किया कोई नहीं आया उसे पूछने।

इसी प्रकार जर्मनी से मुबल्लिग़ सिलसिला हफीज़ुल्लाह भरवाना साहिब हैं वे कहते हैं कि एक नए अहमदी अहसान साहिब जो लबनानी हैं उनकी वहां जर्मनी में मेरे से मुलाक़ात हुई। मुलाक़ात के दौरान उन्होंने अपने असाइलम की कठिनाइयों के हवाले से दुआ के लिए मुझ से कहा। क्योंकि पुलिस ने उनको बताया था कि उनको किसी समय भी वापस भिजवा दिया जाएगा। कहते हैं लेकिन इस आदमी के ईमान में बहुत वृद्धि हुई। ख़ुदा तआला ने बड़ा चमत्कार दिखाया कि उनके केस में तीन साल के लिए उनको सरकारी शरण मिल गई बावजूद इसके कि पुलिस का ख्याल था कि इनको कोई सरकारी शरण नहीं मिलेगी और वापस जाएँगे। और अब वह बहुत ख़ुश हैं और प्रत्येक को बताते हैं कि दुआओं के कारण अल्लाह तआला ने यह चमत्कार दिखाया है।

अल्लाह तआला ग़ैर मुस्लिमों को भी अहमदियों की दुआओं की कुबूलियत के ऐसे नज़ारे दिखता है जो उनको इस बात का कायल कर देते हैं कि इस्लाम का ख़ुदा दुआओं का सुनने वाला ख़ुदा है। मिर्ज़ा अफज़ल साहिब केनेडा से लिखते हैं वेनकोवर के पश्चिम में एक इंटर फैथ कांफ्रेंस में एक शहर में गए और एक फ़ोन बुक देखकर एक सिख को फोन किया कि हम यहाँ एक इंटर फैथ कांफ्रेंस करना चाहते हैं और आपसे मिलना चाहते हैं उन्होंने अत्यंत ख़ुशी से हमारा स्वागत किया। खाना खिलाया अपने घर में ही हमें नमाज़ ज़ुहर असर पढ़ने की स्वीकृति दी। उन्होंने कान्फ्रेंस में हर प्रकार की सहायता देने का वादा किया। जब हम चलने लगे तो उन्होंने अत्यंत विनम्रता से कहा कि उनके बेटे की तीन बेटियां हैं और यह कि हम दुआ करें कि अल्लाह तआला उनको बेटा दे दे। कहते हैं हमने कहा ठीक है और वहीं हाथ उठा कर दुआ भी की और उन्हें बताया कि हम अपने खलीफा को भी दुआ के लिए लिखेंगे और अल्लाह तआला के फज़ल से फिर एक डेढ़ साल के बाद उनका बड़ी ख़ुशी से फ़ोन आया कि अल्लाह तआला ने उनको पोता प्रदान किया है।

दुआओं की कुबूलियत के ये कुछ वाकियात हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि:-

"कानूने कुदरत में कुबुलियते दुआ के उदाहरण मौजूद हैं।" जैसा कि आरम्भ में बच्चे के चिल्लाने के कारण माँ के दूध के उतरने का वर्णन हो चुका है। यह क़ानून-ए-क़ुदरत ही है। आप फरमाते हैं कि इसी क़ानून के अधीन "हर ज़माने में ख़ुदा तआला ज़िन्दा नमूने भेजता है।"

(मल्फूज़ात जिल्द प्रथम पृष्ठ 199, एडिशन 1985 लन्दन)

और यदि क़ुबुलियत-ए-दुआ के ज़िन्दा नमूनों का हिस्सा बनना है तो फिर कुछ अनिवार्य बातें हैं कुछ शर्तें हैं जिनको पूरा करना आवश्यक है। कुछ लोग कह देते हैं दुआ क़ुबूल नहीं हुई। आप फरमाते हैं उनके लिए कुछ शर्तें भी आवश्यक हैं। आप फरमाते हैं कि "दुआ करने से पहले आवश्यक यह है कि आमाले सालिहा (नेक कर्म) और विश्वास पैदा करें क्योंकि जो व्यक्ति अपने अक़ीदे को ठीक नहीं करता और आमाले सालिहा से काम नहीं लेता" (उनको बेहतर नहीं करता) और दुआ करता है वह मानो ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है।"

(मल्फूज़ात जिल्द प्रथम पृष्ठ 200, एडिशन 1985 लन्दन)

अत: ईमान को जहाँ अक़ीदे कि दृष्टि से मज़बूत करने की आवश्यकत है वहां अमली हालत को भी ख़ुदा तआला की रज़ा और उसके आदेशों के अनुसार ढालने की आवश्यकता है। यह नहीं हो सकता कि हम वैसे तो अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार पांच समय की नमाज़ों पर ध्यान न दें और लोगों के बुनियादी अधिकार भी अदा न करें और जब मुश्किल में फस जाएँ तो हमें अल्लाह भी याद आजाए। लोगों के अधिकार पूरे करने भी याद आ जाएँ। पहले अपनी हालतों को बेहतर करना होगा। अक़ीदे की हालत जो बेहतर की है तो केवल अक़ीदे की हालत बेहतर होने से काम पूरा नहीं होता जब तक नेक अमल न हो और नेक अमल यही है कि अल्लाह तआला के हक़ भी अदा किए जाएँ और उसकी सृष्टि के हक़ भी अदा किए जाएँ। अत: यह होगा तो फिर अल्लाह तआला दुआओं को भी सुनता है। अल्लाह तआला हम सबको उसके आदेशों के अनुसार अपनी जिंदगियों को ढालने की तौफ़ीक़ आता फरमाए। और इबादतों और दुआओं के हक़ हमेशा अदा करने की तौफ़ीक़ आता फरमाए।

नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाउंगा। पहला जनाज़ा मुकर्रम चौधरी नेमतुल्लाह साही साहिब का है जिन्होंने अपने रिटायरमेंट के बाद बल्कि इससे पहले ही ज़िन्दगी वक्फ भी की थी और सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान के नाज़िम जायदाद रहे हैं। 15 जनवरी को केनेडा में उनकी वफात हुई।

आपके ख़ानदान में अहमदियत हज़रत हसीन बीबी साहिबा[रज़ि] हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह खान साहिब की माता जी के द्वारा आई थी उन्होंने अपने एक स्वप्न के द्वारा क़ादियान जाकर बैत की थी हसीन बीबी साहिबा के पति हज़रत नसरुल्लाह खान साहिब के छोटे भाई ग़ुलाम अहमद साहिब ने भी क़ादियान में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैत की। यह चौधरी नेमतुल्लाह साहिब के दादा थे चौधरी साहिब को जमाअती खिद्मतों की तौफीक मिली। अमीर साहिब ज़िला हैदराबाद रहे। अन्सरुल्लाह के ज़िला हैदराबाद के नाज़िम रहे, क़ाइद खुद्दामुल अहमदिया हैदराबाद रहे, सदर अंजुमन अहमदिया पाकिस्तान के नाज़िम जायदाद रहे। बचपन से ही नियमित रूप से तहज्जुद के पाबन्द थे और अंतिम सांस तक उसके लिए प्रयत्न करते रहे। नमाज़ बाजमाअत नियमित रूप से अदा करते थे मौसम की सख्ती, सर्दी या बारिश में आपकी कोशिश यही होती थी कि मस्जिद पहुंचें और नमाज़ बाजमाअत पढ़ें। दुआ पर आपको बहुत यकीन था। ख़िलाफ़त से अत्यंत लगाव था जल्से पर आने को बहुत अहमियत देते थे। हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे एक बार हैदराबाद के दौरे पर थे तो रास्ते में चौधरी साहिब का घर आता था, आप वहां गए थोड़ी देर ठहरे चौधरी साहिब तो घर पर नहीं थे उनकी पत्नी से फरमाया कि चौधरी साहिब से कहें कि अब दीन कि ख़िदमत करें हालांकि वैसे तो जमाअती लिहाज़ से वे वह एक ओहदेदार की हैसियत से ख़िदमत कर ही रहे थे। लेकिन जब बाक़ायदा एक पैगाम चौधरी साहिब को मिला तो उसके बाद आपने ज़िन्दगी वक्फ कर दी उसका ख़त लिखा। हमेशा कारकुनों से पहले दफ्तर में पहुंचने की कोशिश करते थे। बड़े सब्र और शुक्र करने वाले थे और दूसरों की तकलीफ का बड़ा ख्याल रखने वाले थे। अपने नफ्स पर काबू था बड़े धीमे और ठन्डे स्वभाव के थे। मामूली बीमारी या तकलीफ का कभी किसी से वर्णन नहीं किया। नौकरी के दिनों में उनका बड़ा अच्छा वेतन होता था इसके बावजूद कभी अपने ऊपर अधिक खर्चा नहीं करते थे या पैसे का दिखावा नहीं था और बड़ी ईमानदारी से उन्होंने काम किया। टेक्सटाइल मीलों में काम किया इसकी वजह से उनके जो मालिक थे उनको भी आप पर बहुत भरोसा था। आपके बेटे ने जब फैसलाबाद में टेक्सटाइल के विभाग में काम शुरू किया तो आपकी ईमानदारी की वजह से बहुत सारी मीलों के मालिकों ने कहा कि आपके साथ हम बिना किसी गारंटी के काम कर देते हैं क्योंकि हमारे लिए यही ज़मानत पर्याप्त है कि तुम चौधरी साहिब के बेटे हो। उनका टेक्सटाइल इंडस्ट्री में बड़ा नाम था। औलाद को भी हमेशा ख़लीफा-ए-वक़्त को ख़त लिखने की नसीहत करते रहते थे। अपने पीछे तीन बेटियां और दो बेटे यादगार छोड़े हैं। अल्लाह तआला के फज़ल से आप मूसी (निज़ाम वसीयत में शामिल) थे।

उनके एक प्रिय लिखते हैं कि चौधरी नेमतुल्लाह साहिब के पिता इनायतुल्लाह साहिब चौधरी ज़फरुल्लाह खान साहिब के चचेरे भाई थे। एक बार उनको पता चला कि चौधरी नेमतुल्लाह साहिब से उनके पिता नाराज़ हैं तो चौधरी ज़फरुल्लाह खान साहिब ने उनके पिता को खत लिखा कि मैं पाकिस्तान में था तो मुझे मालूम हुआ कि आपको प्रिय नेमतुल्लाह पर कुछ गुस्सा है। कहते हैं कि मुझे तो नहीं मालूम कि किस वजह से नाराज़गी है बहरहाल मैं यह कहता हूँ कि आपको मालूम है कि जितना समय प्रिय नेमतुल्लाह इंग्लैंड में रहा। यहाँ वे पढ़ने के लिए आए थे जब चौधरी साहिब भी यहाँ होते थे। मैं जब भी इंग्लैंड गया वह मुझसे मिलता रहा और जब वह अपनी बीमारी में स्वीज़रलैंड में था वहाँ भी मुलाक़ात होती रही। चौधरी ज़फरुल्लाह खान साहिब लिखते हैं कि मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूँ कि मैंने प्रिय को हर प्रकार से आज्ञाकारी, मेहमान नवाज़, शरीफ स्वभाव वाला खुश मिज़ाज और मुख्लिस सहायक पाया। उसके अच्छे स्वभाव और शरीफ तबीयत के कारण आपको उसके पिता होने के नाते गर्व होना चाहिए। फिर फरमाते हैं कि जितने समय बाहर रहा अत्यंत नेक रहा और मेरी तबीयत उससे बहुत खुश रही। मैं लगातार उसके लिए दुआ करता रहता हूँ और अब भी हर नमाज़ में उसके लिए दुआ करता हूँ। लिखते हैं पूरी सच्चाई से यह कह सकता हूँ कि हमारे तीनों प्रियजनों में से जो इस दौरान इंग्लैंड में शिक्षा

प्राप्त करते रहे प्रिय नेमतुल्लाह उनमें से सबसे अधिक नेक और शरीफ स्वभाव का है।

फिर उनके दफ्तर निजामत जायदाद के एक मुख्तार आम लिखते हैं कि कभी उनका अफसरों वाला व्यवहार नहीं रहा बल्कि हमेशा एक शफ़ीक़ बुजुर्ग ही उन्हें पाया। अत्यंत विनम्र स्वभाव था, बड़े दरवेश सिफ़त स्वभात था। सांसारिक तौर पर अत्यंत सफल और ऊंचे ओहदों पर रहे मगर उसके बावजूद बहुत विनम्र थे और अफसरों के साथ सम्बन्धों में अत्यंत आदाब और एहतिराम का संबंध था। उनका अफसर चाहे उम्र में छोटा ही क्यों न होता बड़ा सम्मान करते थे। उन्होंने यह भी लिखा है और बहुत सही लिखा है कि वक़्फ़-ए-ज़िंदगी के बाद वे अपने वजूद को मिटा चुके थे अहंकार का कोई अंश उनके अंदर नज़र नहीं आता था। कहते हैं आधिकतर मैं जब भी दफ्तर में आपके पास हाजिर होता तो आप ज़िक्र ए इलाही में व्यस्त होते। कहते हैं जहां निज़ाम जमाअत की बात आती वहाँ तमाम संबंधो और रिश्तों को एक तरफ रख देते। वैसे रिश्तों को बहुत निभाने वाले थे। कहते हैं रब्वा में किसी अहमदी ने जमाअत की जगह पर कब्जा कर लिया था और लोगों को यह जतलाना शुरू कर दिया कि चौधरी साहिब से मेरी रिश्तेदारी है और मुझे कोई कुछ न कहे। चौधरी साहिब को जब मालूम हुआ तो बहुत सख्ती के साथ उससे पेश आए। कहते हैं ऐसी सख्ती उन्होंने पहले किसी ओर से नहीं की जितनी अपने उस रिश्तेदार से की हालांकि और भी नाजायज़ कब्ज़ा करने वाले थे।

यह कहते हैं कि एक बार मुझे चौधरी साहिब ने बताया कि मैंने सारी ज़िंदगी में कभी अपनी पत्नी से झगड़ा नहीं किया। खिलाफत का वर्णन होता तो आँखों में चमक आ जाती। एक बार उनके बेटे का कहीं रिश्ता हुआ तो उनकी किसी के द्वारा पता चला कि हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे को यह रिश्ता पसंद नहीं है। अपने लड़के को बुला कर उससे कहा कि मैं तुम्हें यह तो नहीं कहता कि रिश्ता तोड़ दो, खतम कर दो, ज़बरदस्ती नहीं कर सकता लेकिन यह ज़रूर कहता हूँ कि जब मुझे यह पता लग गया है कि हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे को पसंद नहीं तो मैं इस शादी में शामिल नहीं हुंगा। तो फिर बेटे ने खुद ही वह रिश्ता तोड़ कर दिया। अल्लाह तआला मरहूम के दरजात बुलंद फरमाए और उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा ज़फरुल्लाह खान बटर साहिब करतौ, शेखूपुरा का है। इनकी 9 जनवरी को वफ़ात हुई। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْن जन्म से ही अहमदी थे। आप के पिता चौधरी अल्लाह दत्ता साहिब ने 1928 में अहमदियत कुबूल की थी। अपने गाँव करतौ, ज़िला शेखूपुरा में उनको बतौर सदर जमाअत खिदमत की तौफ़ीक़ मिली, नमाज़ तहज्जुद बहुत नियमित रूप से अदा करने वाले, पाँच समय की नमाज़ अदा करने वाले, खुत्बे नियमित रूप से सुनने वाले, चंदो में बहुत नियमित थे, तबीयत में सादगी थी लेकिन औलाद की तरबियत के मामले में हर बारीक मामले को दृष्टिगत रखते थे। अपने पीछे तीन बेटियाँ और तीन बेटे यादगार छोड़े हैं। आपके एक बेटे साजिद महमूद बटर साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं और आजकल जामिया अहमदिया इंटरनेशनल घाना में बतौर उस्ताद ख़िदमत कर रहे हैं। अपनी जमाअती ज़िम्मेदारियों की वजह से अपने पिता की वफ़ात पर पाकिस्तान नहीं जा सके। अल्लाह तआला उनको भी सब्र और हौसला अता फरमाए। यह कहते हैं कि बचपन में हमेशा हमारे माँ-बाप ने हमारी तरबियत का ख़याल रखा। हमेशा मुझे अपने साथ मस्जिद लेकर जाते थे और जब कोई मेहमान आता तो बड़ी ख़ुशी से मेरा परिचय करवाते थे कि मैंने इस बेटे को वक़्फ़ किया है और इसे जामिया भिजवाना है। कहते हैं इसका यह प्रभाव था कि कभी मेरे दिल में किसी ओर शिक्षा का ख़याल हि नहीं आया और हमेशा यही ख़याल रहता कि मैंने जामिया जाना है।

अल्लाह तआला उनकी नेकियाँ उनकी औलाद में भी जारी रखे और जिस जज़्बे और एहसास से उन्होंने अपने बेटे को वक़्फ़ किया था अल्लाह तआला उनके बेटे को भी वास्तव में वक़्फ़ की रूह के साथ अपने वक़्फ़ को निभाने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। मरहूम के दरजात बुलंद फरमाए, दया और क्षमा का सलूक फरमाए।

☆ ☆ ☆

पेशगोई मुस्लेह मौऊद तथा उसका महत्त्व

ख़ुदा तआला अपने फ़ज़ल और दया से मानव जाति के सुधार के लिए समय समय पर नबी रसूल भेजता है। और सृष्टि के प्रारम्भ से उसकी ये आदत है। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म की दुआ तथा भविष्यवाणियों के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद तथा महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के रूप में मानव जाति के सुधार के लिए अवतरित हुए। आप ने समस्त संसार के सामने अल्लाह तआला के मिलाप तथा उस में लीन होने के मार्ग प्रशस्त किए और लोगों को अपने सच्चे होने तथा खुदा की ओर से होने के चिन्ह दिखाए ।

प्रिय पाठकों ! आप के बहुत सारे निशानों में से एक चिन्ह पेशगोई "मुस्लेह मौऊद" है। सन 1886 ई. को आप ने सारी दुनिया में ये घोषणा की कि जो व्यक्ति मेरी सच्चाई के लिए कोई प्रमाण देखना चाहता है, क़ादियान आए और मेरे समर्थन में ख़ुदा तआला के निशान देखे। इस घोषणा को सुन कर क़ादियान के कुछ साहूकारों ने आप से निशान दिखाने का निवेदन किया। इन साहूकारों का निवेदन मजमूआ इश्तेहार भाग प्रथम में प्रकाशित है । (विस्तार पूर्वक जानने के लिए पाठक मजमूआ इश्तहार देख सकते हैं।) क़ादियान के इन साहूकारों के निशान देखने के आग्रह पर आप को अल्लाह तआला ने होशियारपुर (पंजाब) में जा कर दुआ करने का संकेत फर्माया। होशियारपुर में आप ने शेख मेहर अली साहिब की कोठी के एक भाग में चालीस दिन तक निरन्तर दुआएँ कीं। इन दुआओं को ख़ुदा तआला ने कुबूल किया। और आप को एक निर्दिष्ट पुत्र के प्राप्त होने का चिन्ह दिया और उस पुत्र के बारे में बहुत से अन्य चिन्ह भी बताए। आप ने इस भविष्यवाणी को 20 फरवरी 1886 ई. को हरे रंग के कागज़ पर प्रकाशित करवाया। इसी कारण भविष्यवाणी मुस्लेह मौऊद को "सब्ज़ इश्तेहार" के नाम से भी पुकारा जाता है। इस भविष्यवाणी का प्रमुख भाग पाठकों के ज्ञान के लिए पेशगोई मुस्लेह मौऊद के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है।

जमाअत अहमदिय्या के दूसरे ख़लीफ़ा सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद सुपुत्र हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को 1944 ई. में अल्लाह तआला ने स्वयं बताया कि आप ही वह "मुस्लेह मौऊद" (निर्दिष्ट पुत्र) हैं जिसका वर्णन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किया है। पेशगोई में वर्णित बहुत सी निशानियों में से एक यह है कि "वह सख्त ज़हीनो फहीम (अत्यधकि बुद्धमिान) होगा।" आपकी सांसारिक पढ़ाई थोड़ी सी थी। किसी कालेज यूनीवर्सिटी की कोई डिग्री नहीं थी। परन्तु अल्लाह तआला ने आप को स्वयं ज्ञान प्रदान किया। अत: आप फर्माते हैं :

"खिलाफत का पद संभालने के बाद अल्लाह तआला ने मुझ पर कुर्आन के ज्ञान इतने अधिक खोले कि अब कयामत तक उम्मते मुस्लिम: इस बात पर मजबूर है कि मेरी पुस्तकों को पढ़े और उन से लाभ उठाये।"

प्रिय पाठको ! आप के लेखों और पुस्तकों की संख्या 747 के लगभग है जो "अन्वारुल उलूम" के नाम से छपे हैं। आप के जुमअ: के खुत्बों की संख्या 2650 है जो "खुत्बाते महमूद" के नाम से छपे हुए हैं। "ख़ुत्बाते निकाह" तथा "ख़ुत्बाते ईदैन" इसके अतिरिक्त हैं।

20 फरवरी का दिन इसी कारण से सारी जमाअत अहमदिया में महत्त्व रखता है क्योंकि इस दिन ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी पूर्ण हुई । जमाअत में इसलिए 20 फरवरी के दिन प्रत्येक वर्ष जलसे किए जाते हैं तथा इस भविष्यवाणी के महत्त्व, इसके लाभ पर चर्चा की जाती है। अल्लाह तआला हमें इस भविष्यवाणी के महत्त्व को समझते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद के बताए हुए मार्गों पर चलने का सामर्थ्य प्रदान करे और हम आपके जीवन की शिक्षाओं को अपना मार्गदर्शक बनाते हुए अपना जीवन सफल करने वाले हों। (आमीन)

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 8 पर शेष

और उसके रसूल की ओर संबन्धित नहीं कर सकता। पंडित लेखराम, मुंशी इन्द्रमन मुरादाबादी और क़ादियान के हिंदू कह रहे हैं कि इस्लाम के बारे में यह दावा कर रहे हैं कि उसका ख़ुदा दुनिया को निशान दिखाने की शक्ति रखता है एक झूठा और बेबुनियाद आरोप है। अगर इस दावे में कोई सच्चाई है तो हमें निशान दिखाया जाए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हैं और कहते हैं कि हे ख़ुदा ! मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू मुझे रहमत का निशान दिखा तू मुझे कुदरत और निकटता का निशान प्रदान फर्मा। इसलिए यह निशान तो ऐसे निकटतम समय में प्रदर्शित होना चाहिए था जबकि वे जीवित मौजूद होते जिन्होंने यह निशान मांगा था। इसलिए ऐसा ही हुआ। 1889 ई. में जब मेरा जन्म अल्लाह तआला की पेशगोइयों के अनुसार हुआ तो वे लोग जीवित मौजूद थे जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से निशान मांगा था। फिर जैसे जैसे में बढ़ा अल्लाह तआला के निशान अधिकतम प्रकट होते चले गए।"

(उद्धरित मैं ही मुस्लेह मौऊद का मिस्दाक़ हूं, अन्वारुल उलूम भाग 17 पृष्ठ 222-223)

अपनी एक रोया(स्वपन) का वर्णन करते हुए कि कैसे यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई मुस्लेह मौऊद पर लागू होती है, हज़रत मुस्लेह मौऊद फर्माते हैं कि मैं उन समांताओं का वर्णन करता हूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई के साथ मेरी रोया को हैं।(एक रोया आपने देखी थी जैसा कि मैंने कहा। फर्माते हैं कि) रोया में मैंने देखा कि मेरी ज़बान में यह वाक्यांश जारी हुआ कि اَنَا الْمَسِيْحُ الْمَوْعُوْدُ مَثِيْلُهٗ وَخَلِيْفَتُهٗ इन शब्दों का मेरी ज़बान में जारी होना मेरे लिए इतना अजूबा था। (ज़ाहिर में तो यह हैरत में डालने वाला अजूबा हो ही सकता है लेकिन सपने में भी मेरी ऐसी स्थिति हो गई) कि क़रीब था इस तहलका से मैं जाग उठता। मेरे मुंह से क्या शब्द निकल गए हैं। बाद में कुछ दोस्तों ने ध्यान दिलाया कि मसीही नफ्स होने का उल्लेख हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इश्तेहार दिनांक 20 फरवरी 1886 ई. में भी आता है हालांकि इस दिन यह इश्तेहार पढ़कर आया था लेकिन जब मैं ख़ुत्बा पढ़ रहा था तब इश्तेहार के यह शब्द मेरे दिमाग़ में न थे। ख़ुत्बे के बाद शायद दूसरे दिन मौलवी सैयद सरवर शाह साहब ने ध्यान दिलाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इश्तेहार में लिखा है कि वह दुनिया में आएगा और अपने मसीही नफ्स और रूहुल हक की बरकत से कइयों को बीमारियों से साफ करेगा। इस पेशगोई में मसीह शब्द का प्रयोग हुआ है। दूसरे मैं ने रोया में देखा कि मैं ने बुत तुड़वाए हैं। इसका संकेत भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस पेशगोई के दूसरे भाग में पाया जाता है कि वह रूहुल हक की बरकत से बहुतों को बीमारियों से साफ करेगा। कहते हैं कि रूहुल हक तौहीद की रूह को कहा जाता है और सच्ची बात तो यह है कि मूल बात ख़ुदा तआला का अस्तित्व ही है बाकी सब चीजें प्रतिछाया और छाया हैं। इसलिए रूहुल हक का अर्थ तौहीद की रूह है जिसके बारे कहा गया था कि वह उस की बरकतों से बहुतों को बीमारियों से साफ करेगा। तीसरे मैंने यह भी देखा कि मैं भाग रहा हूँ। इसलिए भाषण में मैंने उल्लेख किया था कि रोया में यही नहीं कि तेज़ी से चलता हूँ बल्कि दौड़ता हूँ और पृथ्वी मेरे कदमों तले सिमटती चली जाती है। मौऊद बेटे की पेशगोई में यह शब्द हैं कि वह जल्द जल्द बढ़ेगा। इसी तरह रुउया में मैंने देखा कि कई विदेशों में गया हूँ और फिर वहाँ भी मैं अपने काम को ख़त्म नहीं किया बल्कि और आगे जाने का इरादा कर रहा हूँ। जैसे मैंने कहा, हे अब्दुश्शकूर ! अब मैं आगे जाऊँगा और जब इस यात्रा से वापस आऊँगा तो देखूंगा कि इस समय में तूने तौहीद को स्थापित कर दिया है, शिर्क को मिटा दिया है और इस्लाम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा को लोगों के दिलों में मज़बूत कर दिया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर अल्लाह तआला ने जो वचन अवतरित किया उसमें भी इस ओर इशारा पाया जाता है इसलिए लिखा है वह पृथ्वी के किनारों तक प्रतिष्ठा पाएगा। यह शब्द भी उसके दूर दूर जाने और चलते चले जाने की ओर इशारा कर रहे हैं।

प्रत्यक्ष ज्ञान और गूढ़ ज्ञान द्वारा भरे जाने का अर्थ।

फिर यह पेशगोई में उल्लेख आता है कि वह प्रत्यक्ष ज्ञान और गूढ़ ज्ञान द्वारा भरा जाएगा। इस की और भी मेरी मेरी रोया में इशारा किया गया है इस सपने में बड़े ज़ोर से कह रहा हूं कि मैं वह हूँ जिसे इस्लामी ज्ञान और अरबी भाषा के ज्ञान और इस भाषा का दर्शन माँ की गोद में उसके दोनों स्तनों से दूध के साथ पिलाए गए थे। फिर लिखा था वह इलाही जलाल के प्रकट होने का कारण होगा। इसके बारे में भी रोया में स्पष्टता पाया जाता है जैसा कि मैंने बताया कि रोया में मेरी ज़बान पर कन्ट्रोल किया गया और मेरी ज़बान से ख़ुदा तआला ने बोलना शुरू कर दिया। फिर रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और आप ने मेरी ज़बान से शब्द कहे। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए और आपने मेरी ज़बान से बोलना शुरू कर दिया। यह इलाही महिमा का एक अजीब प्रकटन था जिसका पेशगोई में भी वर्णन पाया जाता था। इसलिए यह भी इन दोनों में एक समानता पाई जाती है।

वह सम्मान वाला और गरिमा और धन वाला होगा का अर्थ

फिर लिखा था वह सम्मान वाला और गरिमा और धन वाला होगा और यह पेशगोई के शब्द हैं और रोया में यह दिखाया गया कि एक राष्ट्र है जिसमें एक व्यक्ति को लीडर नियुक्त करता हूँ और उनके शब्दों में जैसे एक शक्तिशाली राजा अपने अधीन को कह रहा हो उसे कहता हूं कि हे अब्दुश्शकूर ! तुम मेरे सामने इस बात के लिए ज़िम्मेदार होगे कि तुम्हारा देश निकटतम समय में तौहीद पर ईमान ले आए। बहुदेववाद को छोड़ दे। रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा का पालन करे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेश पर अपने ध्यान रखे। यह सम्मान वाले और महानता के ही शब्द हो सकते हैं जो रोया में मेरी ज़बान में जारी किए गए।

हम इस में अपनी रूह डालेंगे का अर्थ

और जो पेशगोई में उल्लेख आता है कि हम अपनी रूह डालेंगे यह इस बात का संकेत था कि इस पर इलाही कलाम अवतरित होगा और रोया में इसका वर्णन आता है। इसलिए इलाही क़ुदरत के अधीन रोया में मैं समझता हूँ कि अब मैं नहीं बोल रहा बल्कि ख़ुदा तआला द्वारा इलहामी रूप से मेरी ज़बान पर बातें जारी की जा रही हैं। इसलिए इस हिस्से में पेशगोई के इन्हीं शब्दों के पूरा होने की ओर इशारा है कि हम इस में अपनी रूह डालेंगे।

फिर रोया का यह हिस्सा भी पेशगोई के इन शब्दों की पुष्टि करता है कि रोया में मैं यह समझता हूं कि हर कदम जो उठा रहा हूँ वह किसी पहली वह्यी के अनुसार उठा रहा हूँ अब मैं विचार करता हूं कि भविष्य में जो यात्रा करूंगा वह एक पूर्व वह्यी के अनुसार होगी। इससे संकेत मुस्लेह मौऊद वाली पेशगोई ही की ओर था और यह बताया गया था कि मेरा जीवन इस पेशगोई का नक्शा है और इलाही क़ुदरत के अधीन है। अब मैं समझता हूँ कि पहली पेशगोई के बारे में जो यह अस्पष्टता रखा गया कि यह किसकी पेशगोई है इसमें यह ज्ञान था ताकि मुस्लेह मौऊद की पेशगोई की ओर ध्यान दिलाकर इस मानसिक ज्ञान का रोया में दख़ल न हो जाए जो मुझे इस पेशगोई के बारे में प्राप्त थी। इस प्रकार के उपाय रोया और इलहाम में अल्लाह तआला द्वारा हमेशा धारण किए जाते हैं और आकाशीय भेदों में से एक भेद हैं। यह वह समानताएं हैं जो मेरी रोया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पेशगोई में पाई जाती हैं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 25 पृष्ठ 69 से 71 ख़ुत्बा जुम्अ: 4 फरवरी 1944ई)

(उद्धरित ख़ुत्बा जुम्अ: 20 फरवरी 2015 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

जमाअत के युवाओं से ख़िताब

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि का मंज़ूम (पद्यात्मक) कलाम

नौनिहालाने जमाअत मुझे कुछ कहना है,
पर है यह शर्त कि ज़ाया मेरा पैग़ाम न हो ।

चाहता हूँ कि करूं चन्द नसाइह तुम को,
ताकि फिर बाद में मुझ पर कोई इल्ज़ाम न हो।

जब गुज़र जाएंगे हम तुम पर पड़ेगा सब बार,
सुस्तियां तर्क करो तालिबे आराम न हो ।

ख़िदमते दीन को इक फ़ज़्ले इलाही जानो,
उसके बदले में कभी तालिबे इन्आम न हो।

दिल में हो सोज़ तो आंखों में रवाँ हों आंसू,
तुम में इस्लाम का हो मग़्ज़ फ़क़त नाम न हो।

सर में नख़वत न हो आंखों में न हो बर्क़े ग़ज़ब,
दिल में कीना न हो लब पर कभी दुश्नाम न हो।

ख़ैर अन्देशी-ए-अहबाब रहे मद्दे नज़र,
ऐब चीनी न करो मुफ्सिदो नम्माम न हो।

छोड़ दो हिर्स करो ज़ुहदो क़नाअत पैदा,
ज़र न महबूब बने सीम दिल आराम न हो।

रग़बते दिल से हो पाबन्दे नमाज़ो रोज़ा,
नज़र अन्दाज़ कोई हिस्स-ए-अहकाम न हो।

पास हो माल तो दो उस से ज़कातो सदक़ा,
फ़िक्रे मिस्कीन रहे तुम को ग़मे अय्याम न हो।

हुस्न उसका नहीं खिलता तुम्हें यह याद रहे,
दौशे मुस्लिम पै अगर चादरे अहराम न हो।

आदते ज़िक्र भी डालो कि यह मुमकिन ही नहीं,
दिल में हो इश्क़े सनम लब पै मगर नाम न हो।

अक़्ल को दीन पर हाकिम न बनाओ हरगिज़,
यह तो ख़ुद अन्धी है गर नय्यरे इल्हाम न हो।

जो सदाक़त भी हो तुम शौक़ से मानो उस को,
इल्म के नाम से पर ताबिए औहाम न हो।

दुश्मनी हो न मुहिब्बाने मुहम्मद (स) से तुम्हें,
जो मुआनिद हैं तुम्हें उन से कोई काम न हो।

अम्न के साथ रहो फ़ित्नों में हिस्सा मत लो,
बाइसे फ़िक्रो परेशानी-ए-हुक्काम न हो।

अपनी इस उम्र को एक ने"मते उ़ज़्मा समझो,
बाद में ताकि तुम्हें शिक्वए अय्याम न हो।

हुस्न हर रंग में अच्छा है मगर ख़्याल रहे,
दाना समझे हो जिसे तुम वह कहीं दाम न हो।

तुम मुदब्बिर हो कि जरनैल हो या आलिम हो,
हम न खुश होंगे कभी तुम में गर इस्लाम न हो।

सैल्फ़ रेस्पैक्ट का भी ख़्याल रखो तुम बेशक,
यह न हो पर कि किसी शख़्स का इकराम न हो।

उस्र हो, युस्र हो, तंगी हो कि आसाइश हो,
कुछ भी हो बन्द मगर दा"वते इस्लाम न हो।

तुम ने दुनियां भी जो की फ़तह तो कुछ भी न किया,
नफ्स वहशीओ जफ़ाकश अगर राम न हो।

मन्नो अहसान से आ"माल को करना न ख़राब,
रिशत-ए-वस्ल कहीं क़ित्आ सरे बाम न हो।

भूलियो मत कि नज़ाकत है नसीबे निस्वां,
मर्द वह है जफ़ाकश हो गुल अन्दाम न हो।

शक्ल मै देख कि गिरना न मगस की मानिन्द,
देख लेना कि कहीं दुर्द तहे जाम न हो।

याद रखना कि कभी भी नहीं पाता इ़ज़्ज़त,
यार की राह में जब तक कोई बदनाम न हो।

काम मुश्किल है बहुत मन्ज़िल-ए-मक़सूद है दूर,
ऐ मेरे अहले वफ़ा सुस्त कभी गाम न हो।

गामज़न हो कि रहे सिद्क़ो वफ़ा पर गर तुम,
कोई मुश्किल न रहेगी जो सरअंजाम न हो।

हश्र के रोज़ न करना हमें रुस्वा-ओ-ख़राब,
प्यारो आमोख़्त-ए-दरसे वफ़ा ख़ाम न हो।

हम तो जिस तरह बने काम किए जाते हैं,
आपके वक्त में यह सिलसिला बदनाम न हो।

मेरी तो हक़ में तुम्हारे यह दुआ है प्यारो,
सर पै अल्लाह का साया रहे नाकाम न हो।

ज़ुल्मते रन्जो ग़मो दर्द से महफ़ूज़ रहो,
महरे अन्वार दरख़्शन्दा रहे शाम न हो

(कलामे महमूद)

☆ ☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

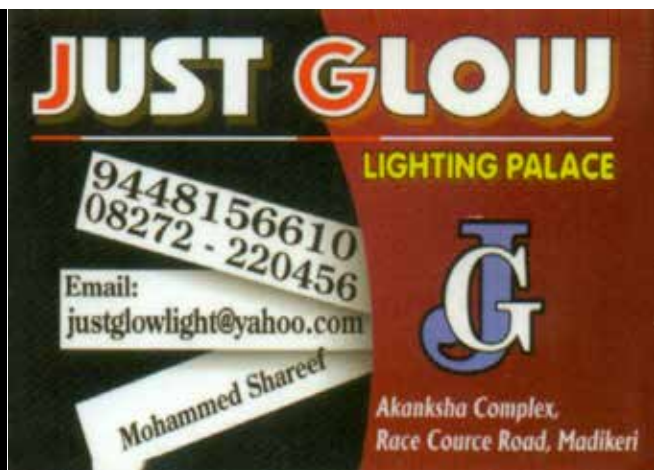

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अगस्त 2017 ई. (भाग -11)

☆ हुज़ूर अनवर ने फरमायाअहमदियत में जब तक ऐसी माताएं और ऐसी पत्नियां मौजूद हैं जो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देती हैं और जिन्हें दुनिया के धन की नहीं बल्कि धर्म की चिंता है तो इंशा अल्लाह जमाअत फैलेगी और उनकी शुभकामनाएं पूरी होंगी।

☆ मैंने बहुत सारी दुनिया देखी है, लेकिन मैंने इस माहौल को अब तक कहीं नहीं देखा है। अहमदी बहुत भाग्यशाली है कि उनके पास एक प्रिय नेता है जो अहमदियों को प्यार करता है और उन का मार्गदर्शन करता है। और इस जलसा में शामिल हो कर मैं अपने ईमान को मज़बूत महसूस करता हूं।

☆ बैअत करने के बाद मेहमानों की प्रतिक्रियाएं

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

निकाह की घोषणा

नमाज़ ज़ुहर अदा करने के बाद दो बजकर दस मिनट हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, तअव्वुज़ और तसमिया के बाद ख़ुत्बा निकाह की मसनू: आयतें सुनाने के बाद कहा कि मैं इस समय कुछ निकाहों की घोषणा करूंगा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित 16 निकहों की घोषणा की।

(1) अज़ीज़ा हिबतुल वहीद साहिबा पुत्री मुहम्मद अहमद साहिब मरहूम आफ फोर्ट अब्बास पाकिस्तान का निकाह अज़ीज़ अदनान अहमद मुरब्बी सिलसिला इस्लामाबाद पाकिस्तान पुत्र आदरणीय नासिर अहमद साहिब के साथ संपन्न हुआ।

(2) अज़ीज़ा रग़ीबह ज़हूर चौधरी पुत्री आदरणीय चौधरी ज़हूर इलाही साहिब बंद फ्रांस का निकाह अज़ीज़ चौधरी ओसामा अहमद मुरब्बी सिलसिला फ्रांस पुत्र आदरणीय चौधरी मंकसूद रहमान साहिब के साथ संपन्न हुआ।

(3) अज़ीज़ा नाजिया निगार पुत्री आदरणीय मुबश्शर अहमद साहिब शहीद ऑफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ तिमीज़ अहमद बट पुत्र आदरणीय रफीक अहमद बट साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

(4) अज़ीज़ा हिना अहमद पुत्री आदरणीय मुबश्शर अहमद साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ नजीब अहमद शाहिद पुत्र आदरणीय मुबारक अहमद शाहिद साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

(5) अज़ीज़ा फरीह: महमूद पुत्री आदरणीय मियां तारिक महमूद साहिब आफ इटली का निकाह अज़ीज़ दानिश महमूद इब्न आदरणीय शाहिद महमूद साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

(6) अज़ीज़ा उज़मा अफज़ल साहिबा पुत्री आदरणीय अफ़ज़ल मुहम्मद साहिब आफ इटली का निकाह अज़ीज़ सज्जाद हैदर साहिब बंद जर्मनी आदरणीय अशरफ मुहम्मद साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

(7) अज़ीज़ा नादिया रबाब पुत्री आदरणीय मकबूल अहमद साहिब आफ रबवा का निकाह अज़ीज़ अशअर अहमद इब्ने आदरणीय मुहम्मद सलीम साहिब आफ रावलपिंडी पाकिस्तान के साथ तय पाया।

(8) अज़ीज़ा इक़रा ख़लील पुत्री आदरणीय ख़लील अहमद साहिब आफ रबवा की निकाह अज़ीज़ मुहम्मद इस्माइल ख़ालिद इब्न आदरणीय मुहम्मद इकबाल साहिब आफ कनरी सिंध पाकिस्तान के साथ तय पाया।

(9) अज़ीज़ा तहमीना सदफ मिर्ज़ा पुत्री आदरणीय नसीर अहमद मिर्ज़ा साहिब कनाडा का निकाह अज़ीज़ शहज़ाद बशीर इब्ने शाहबाज़ अहमद साहिब आफ यू.के के साथ संपन्न हुआ।

(10) अज़ीज़ा गज़ाला खालिद वाकफह नौ पुत्री आदरणीय नदीम अहमद साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ शहज़ाद अहमद आरिफ बंद जर्मनी आदरणीय तारिक करीम आरिफ साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

(11) अज़ीज़ा नजमुल सहर शरीफ पुत्री आदरणीय शरीफ अहमद साहिब आफ स्विस का निकाह अज़ीज़ वफ़ा मुहम्मद मुरब्बी सिलसिला स्विस पुत्र आदरणीय अफ़ज़ल मुहम्मद साहिब के साथ संपन्न हुआ।

(12) अज़ीज़ा सायरा ख़लील पुत्री आदरणीय ख़लील अहमद साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ बासल असलम शिक्षार्थी जामिया अहमदिया जर्मनी पुत्र आदरणीय मुहम्मद असलम साहिब के साथ संपन्न हुआ।

(13) अज़ीज़ा आसफा वसीम जावेद पुत्री आदरणीय वसीम अहमद साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ अनस अहमद जावेद शिक्षार्थी जामिया अहमदिया जर्मनी पुत्र आदर्णीय मुहम्मद जावेद साहिब के साथ संपन्न हुआ।

(14) अज़ीज़ा फरीहा ख़ालिद पुत्री आदरणीय फरीद अहमद खालिद साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ नूरुद्दीन अशरफ शिक्षार्थी जामिया अहमदिया जर्मनी पुत्र आदरणीय मुहम्मद अशरफ ज़िया साहिब मुरब्बी सिलसिला के साथ संपन्न हुआ।

(15) अज़ीज़ा श्माइलह एजाज़ वाकफा नौ पुत्री आदरणीय एजाज़ अहमद अनवर साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ मुहम्मद अदनान वक्फे नौ पुत्र आदरणीय मुहम्मद अशरफ तारड़ साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

(16) अज़ीज़ा सलमा नासिर पुत्री आदरणीय नासिर अहमद साहिब आफ जर्मनी का निकाह अज़ीज़ नवीद अहमद इब्ने आदरणीय शोएब अहमद साहिब आफ जर्मनी के साथ संपन्न हुआ।

इजाब तथा कुबूल के बाद हुज़ूर अनवर अय्दहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई और दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने शफकत करते हुए दोनों तरफ वालों को हाथ मिलाने का सौभाग्य भी दिया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास स्थान पर तशरीफ ले गए।

यहां तो हर व्यक्ति सभ्य, चरित्रवान और महिलाओं का सम्मान करने वाल है, यहां तो बड़े और बच्चे सभी मुहब्बत के राजदूत हैं।

जो धार्मिक वातावरण, शांति, मानवता और नैतिकता यहां देखी जा सकती है और इस से लाभ उठाने का अवसर मिलता है वह दुनिया में कहीं भी नहीं है। अहमदी लोग बहुत भाग्यशाली है कि उनके पास एक प्रिय नेता है जो अहमिदयों से प्यार करता है और उन का प्रत्येक समय मार्गदर्शन करता है।

मैं हुज़ूर अनवर के सभी उत्तरों से संतुष्ट थी, और हुज़ूर का शुक्रिया भी अदा करना चाहती हूं कि आप ने मुझे नए मार्गों की तरफ मार्गदर्शन किया। हुज़ूर अनवर से ही मैंने इस्लाम की वास्तिवक तस्वीर देखी।

यह जमाअत और इस के जलसे दूसरे मुसलमानों के लिए एक आदर्श हैं और इस प्रकार की शान्ति वाली शिक्षा और इस प्रकार की संगठित जमाअत इस योग्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व करे, आपकी जमाअत का परिचय मैसिडोनिया के मुसलमानों को हम ख़ुद जा कर से पेश करेंगे।

मैं दूसरी बार जलसा में उपस्थित हुआ हूं, लेकिन यहां तक कि अगर मैं सौ साल भी ज़िन्दा रहूं तो भी मेरी यही इच्छा है कि हर समय शामिल हूं और सारी बरकतें जो इस जलसा में शामिल होने वालों को मिलती हैं हमें मिलती रहें।

अगर दुनिया सीधे मार्ग पर आना चाहती है, तो उसे ख़लीफतुल मसीह के व्यक्तित्व और आवाज़ की ओर आना चाहिए। आपकी शिक्षा को मानना होगा।

हुज़ूर अनवर की, 28,29. और 30 अगस्त की वयस्तता) (बाकी रिपोर्ट 28 अगस्त 2017) विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडलों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

हंगरी

कार्यक्रम के अनुसार, सुबह 6:00 बजे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ अपने दफतर पधारे और विभिन्न देशों के प्रतिनिधिमंडलों के

साथ मुलाकात शुरू की। शाम के इस सत्र में सब से पहले हंगरी के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। हंगरी से कुल 20 लोग आए थे, जिनमें से 11 अहमदी और 9 अन्य अतिथि थे। एक अतिथि महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर कहा, कि हमें जलसा बहुत अच्छा लगा। सभी व्यवस्थाएं बहुत अच्छी थीं। व्यवस्था में बड़ा तरक्की थी हम रूसी भाषा का अनुवाद को सुनते रहे। हंगरी के पुराने लोग सभी रूसी भाषा जानते हैं।

एक अतिथि महिला ने कहा कि पिछले साल मैं जलसा में शामिल थी मैं हुज़ूर अनवर की तकरीरों से बहुत प्रभावित हूं। हमारा ध्यान बहुत रखा गया है। अख़बारों में केवल मुसलमानों के खिलाफ प्रोपगण्डा ही है, वास्तव में आप लोग तो बहुत ही सहानुभूतिपूर्ण और शांतिपूर्ण लोग हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यही सच्चा इस्लाम है जो पूरे विश्व में फैल रहा है। यहां 40,000 से ज्यादा लोग इकट्ठे हुए हैं और विभिन्न देशों के हैं। हर कोई प्रेम के साथ रह रहा है और एक दूसरे से प्यार करता है। कोई लड़ाई झगड़ा नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: अब लोग दुनियादार हो गए हैं धर्म की तरफ कोई ध्यान नहीं है आप लोग दिल में सोचते होंगे कि जो मौलवी कहते हैं वे ग़लत है हमारी नमाज़ भी वही है और कुरआन भी वही है। सारे जलसे में अल्लाह और रसूल की बातें हुई हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: ये सारी बातें ग़ैर मुस्लिम दुनिया के बताने की ज़रूरत है इसी तरह इस्लाम की वास्तविक शिक्षा दुनिया में फैलेगी ।

एक अतिथि आगया आयास्तान साहिबा थीं महोदया का असल देश आर्मेनिया हैं, हंगरी में अपने शहर ग्योर में एक लोकप्रिय सामाजिक इंसान हैं और हंगरी में अर्मेनियाई कैबिनेट के प्रवक्ता हैं हंगरी के मुबल्लिग़ उनके बारे में लिखते हैं एक शाम को जलसा के सत्र के अंत में ख़ुद ही कहने लगीं कि हज़ारों मुसलमान पुरुषों में बिना भय के घूम रही हूं। यहां हर व्यक्ति सभ्य, विनम्र और अनुशासित और महिलाओं का सम्मान करने वाला है। मीडिया का कहना है कि आप्रवासी विशेषकर मुसलमान, महिलाओं से अनैतिक और अनुचित व्यवहार करने वाले हैं,उन को यहाँ आकर देखना चाहिए कि यह मुसलमान कौम कैसी सभ्य है। छोटा सा बच्चा मेरे पास आया उसने मुझसे पूछा नहीं तुम कौन हो? तुम कहाँ से आए हो? इसके बजाय बड़े प्यार से पानी की गिलास कर दिया। जब मैंने पानी पी लिया तो एक और बच्चा पीछे से आया और ख़ाली गिलास मेरे से ले लिया। यहां तो बड़े और बच्चे सभी मुहब्बत के राजदूत हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जब जलसा की हाज़री वर्णन की तो कहने लगीं कि इसाइयों को इस से दस गुणा अधिक संख्या में यहां आना चाहिए और सीखना चाहिए कि सभ्य समाज में एक-दूसरे का सम्मान कैसे किया जाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात के बाद कहने लगीं इतना बड़ा आदमी इतना प्यार से और धीमा लहदे में संवार संवार कर बात करता है जो मेरे लिए विश्वासयोग्य नहीं हैं किसी को लीडरी मिल जाए तो लोगों से पहले तो मिलना ही गवारा नहीं करता और अगर मिल ले तो इस की बातों और भाव भंगिमाओं से पत चल जाता है कि वह कह रहा होता हैं कि मैं तुम से बड़ा हूं। परन्तु इमाम जमाअत अहमदिया बहुत ही प्यार से और दिल को मोह लेने वाल अंदाज़ में बात करते हैं जो सांसारिक लीडरों में देखने को नहीं मिलती। मैंने हुज़ूर अनवर की सारी तकरीरें और ख़िताब सुनें हैं इन से मेरे इल्म में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। औरतों और जिहाद के बारे में बहुत लाभदायक बातें प्राप्त हुईं।

एक मेहमान "वहान वागानिया" साहिब भी जलसा में शामिल हुए । व्यापारी आदमी हैं किसी समय सेना में भी रह चुके हैं वह कहने लगे कि जलसा के विस्तार का बावजूद व्यवस्था आदर्श थी। इस जलसा के द्वारा जमाअत अहमिदया के सम्बन्धों में बहुत अधिक गहराई पैदा होती है। हंगरी के मुबल्लिग़ साहिब ने बताया कि हुज़ूर अनवर के सा जब मुलाकात हुई तो हुज़ूर अनवर ने उन्हें पहचान लिया। इस पर वह बहुत हैरान हुए और बड़े गर्व से बताने लगे कि हुज़ूर बहुत अधिक लोगों से मिलते हैं परन्तु इस के बावजूद मुझे पहचान लिया।

हंगरी से एक युवा मअहूद अल-बकरी, जिन का जॉर्डन से संबंध है और हंगरी में एक छात्र हैं वह भी जलसा में शामिल हुए।वह कहने लगे, मैंने जमाअत अहमिदया के बारे में कई साल पहले सुना था, कि हंगरी आकर पहली बार किसी अहमदी से मिला इमाम जमाअत अहमिदया से मुलाकात एक यादगार क्षण था जो दिलको छू लेने वाला था। मैं ने जलसा में शान्ति और सहन करने की बातें सीखीं जिस पर अहमदी अनुकरण करते हैं

हंगरी के एक अतिथि गैबेर टॉमस ने अपनी प्रतिक्रिया का वर्णन करते हुए कहा कि धार्मिक वातावरण, शांति, मानवता और नैतिकता यहां देखी जा सकती है और इस से लाभ उठाने का अवसर प्राप्त होता है। मैंने अमेरिका में भई एक लंबे समय एक पादरी के रूप में काम किया है और मैंने बहुत सारी दुनिया देखी है, लेकिन मैंने इस माहौल को अब तक कहीं नहीं देखा है। अहमदी बहुत भाग्यशाली है कि उनके पास एक प्रिय नेता है जो अहमदियों को प्यार करता है और उन का मार्गदर्शन करता है। और इस जलसा में शामिल हो कर मैं अपने ईमान को मज़बूत महसूस करता हूं। आपकी जमाअत का दिन प्रतिदिन बढ़ रही है और हम ईसाई दिन प्रतिदिन कम हो रहे हैं हमारे चर्च खाली हो रहे हैं इमाम जमाअत अहमदिया ने यह भी कहा कि भौतिकता बढ़ रहा है और आध्यात्मिकता कम हो रही है। हमें लोगों को यह बताना होगा कि हमारा एक मालिक है और उसे स्वीकार कर के ही दुनिया में शांतिपूर्ण तरीके रहा जा सकता है इमाम जमात अहमदिया ने बिल्कुल सही फरमाया है कि यही हमारा मिशन है, और इस के लिए विशेष रूप से कोशिश करने की ज़रूरत है।

हंगरी के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 6 बज कर 15 मिनट तक जारी रही अन्त में वफद से सारे लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीरें लाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बोस्निया

इस के बाद में, बोस्निया के प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मिलने का अवसर प्राप्त किया। इस साल बोस्निया से 46 लोगों का प्रतिनिधिमंडल जलसा में शामिल हुआ। उनमें से अहमदी लेगों की संख्या 18 थी, जबकि 28 लोगों को तब्लीग़ जारी थी ।

एक मेहमान यासमीन साहिब बोस्निया में एक ग़ैर सरकारी संगठन के सदर हैं कुछ समय पहले जमाअत से परिचय हुआ था। उन्हें जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने की दावत दी गई अत:, अपनी निजी कार में लगभग 1200 किलोमीटर की यात्रा तय कर के जलसा में शामिल हुए। अपने विचारों को व्यक्त करते हुए लिखते हैं, मैं यह देखकर हैरान हूं कि ये किस प्रकार के लोग हैं? जलसा की सभी व्यवस्थाओं में मैंने ग़लती नहीं देखी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मिलना अपने आप में एक विशेष अनुभव है। हुज़ूर एक इतनी बड़ी जमाअत के मार्गदर्शक और लाखों फिदा होने वाले अहमदियों के लीडर होने का बावजूद बहुत विनम्र इंसान हैं। और यही बात है जो मुझे जैसे से व्यक्ति को भी हुज़ूर का चाहने वाला बना देती है

एक मेहमान अनजाद साहिब बोस्नियाई के रोमन समुदाय के एक प्रमुख और प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ के रूप में जाने जाते हैं, और शहर तुज़ला के कौंसलर भी है। अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि जलसा के सभी कार्य बहुत उत्तम रूप से सम्पन्न हुए हैं। मैंने इससे पहले इस तरह के एक कार्यक्रम में कभी भाग नहीं लिया था। यह घटना मेरे लिए अलग-अलग विभिन्न आयामों से एक सबक था। श्रमिकों की ईमानदारी को देखकर, मैं समझ गया कि ये लोग ईमान में बहुत मज़बूत हैं और उनके कथन के साथ उनका व्यवहार उनकी तरक्की का रहस्य है। और उन लोगों में, इस स्थिति को बनाने की योजना उनके ख़लीफा के सिर पर है ख़लीफा के भाषणों और उनसे मुलाकात करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि हुज़ूर एक बहुत ही उच्च स्तर के आदमी हैं और इस बात का सबूत यह है कि मैंने हुज़ूर को सब लोगों से अधिक विनम्र और विनय वाला पाया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात के दौरान महोदय ने अपना परिचय करवाते हुए कहा कि कहा, मेरा सम्बन्ध रोमन समुदाय से है। और यूरोप में लगभग 12 से 15 मिलियन हैं महोदय ने कहा कि मेरा प्रश्न यह है कि यह क़ौम विभिन्न परीक्षणों से गुज़र रही है। हजारों सालों से भटक रही है उनकी तरक्की कैसे संभव है?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कहा: वास्तविकता यह है कि केवल यह क़ौम ही नहीं है, बल्कि सभी मुसलमानों की ही स्थिति है कि वे भटक रहे हैं। और इन की स्थिति की ओर इशारा करते हुए, हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहो अलिह वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि मुसलमानों पर एक इस प्रकार की अवनति का युग आएगा। लेकिन इस के बाद यह भविष्यवाणी भी की थी कि इस अवधि में एक सुधारक अल्लाह तआला की तरफ से आएगा और मुसलमानों पर फर्ज़ है कि उस इमाम को स्वीकार करें और उस इमाम तक मेरा सलाम पहुचांए और उसके अनुकरण से ही फिर से तरक्की होगी। अत: वह मसीह

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 1 March 2018 Issue No. 9

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और महदी आया, और उस के अनुकरण से ही उन्नति है। उदाहरण के लिए, अफ्रीका के लोगों को देखें, जिन्होंने इस इमाम को स्वीकार किया है उन की अवस्था बदल गई है। इसी प्रकार इंडोनेशिया, पाकिस्तान इंडिया से इस इमाम को स्वीकार करने वालों की अवस्था है इसी प्रकार आप ने इस जलसा में भी देखा होगा कि किस प्रकार लोग एकता और साथ मिलकर काम कर रहे हैं। यह सब बरकत इस इमाम के अनुकरण के कारण से है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा: हमारा काम संदेश को पहुंचाना है। धर्म में ज़बरदस्ती नहीं है हमें तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का संदेश लोगों को पहंचाना है आगे स्वीकार करने वालों का काम है कि स्वीकार करते हैं या नहीं

एक अहमदी महिला Senada साहिबा जिनका संबंध सर्बिया के शहर नोवी पाज़र से है उन्होंने मुलाकात के दौरान अर्ज़ किया हम ने 17 साल पहले अहमदियत स्वीकार की थी और मेरी इच्छा है कि सर्बिया में जमाअत की तरक्की हो। मेरे पित जर्मनी में रोज़गार की तलाश में आए हुए हैं और वह वीज़ा के लिए कोशिश कर रहे हैं। दुआ करें कि उन्हें वीज़ा न मिले ताकि वह सर्बिया वापस जाकर जमाअत की सेवा करें और उन्हें छोटा मोटा काम सर्बिया में ही मिल जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने कहा: अल्लाह उन के लिए वहीं प्रबन्ध करे। जो कि प्रत्येक दृष्टि से बेहतर हो और फरमाया कि अहमदियत में जब तक ऐसी माताएं और ऐसी पत्नियां मौजूद हैं जो धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देती हैं और जिन्हें दुनिया के धन की नहीं बल्कि धर्म की चिंता है तो इंशा अल्लाह जमाअत फैलेगी और उनकी शुभकामनाएं पूरी होंगी।

एक महिला ने कहा कि हर जलसा ही विशेष होता है, लेकिन यह जलसा बहुत ही खास था। हुज़ूर अनवर के ख़िताब और प्रस्तुतीकरण बहुत खास थे ख़िलाफत की स्थिति पर हमारे ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई है। हमने तकरीरों से बहुत लाभ उठाया है।

जलसा में शामिल होने वाले एक मेहमान जो पहली बार जलसा में आए थे, जलसा के माहौल ने उन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव डाला है । महोदय ने कहा कि मैंने वापस जाकर यही संदेश देना है कि यह सम्मेलन देखकर और हुज़ूर अनवर से मुलाकात करके अपने दिल की स्थिति वर्णन योग्य नहीं है। इन चीज़ों को केवल महसूस किया जा सकता है इसलिए हर किसी को चाहिए कि इस जन्नत तुल्य समाज में कुछ दिन बिताए ताकि उसे वास्तविक जन्नत के बारे में विश्वास पैदा है जाए।

बोस्निया से एक मेहमान दयाना साहिबा भी जलसा में शामिल हुईं आप पेशे की दृष्टि से एक नर्स हैं और जमाअत के साथ इन के साथ इन की फैमली का एक दोस्ताना सम्बन्ध है। अपने पति और बेटे के साथ बोस्निया में जमाअत के प्रोग्राम में जमाअत के कामों में ख़ुशी से सहयोग करते हैं। महोदया अपने पति और माता पिता के साथ सफर के खर्च बर्दाशत करते हुए जलसा में शामिल हुई हैं। महोदया ने कहा कि जलसा के प्रबन्ध बहुत उत्तम रूप से किए गए हैं। इन काम करने वालों को देखकर हमें ख़ुद शर्म महसूस होती थी।ये लोग हमारे लिए इतना कष्ट बर्दाशत कर रहे हैं। अत: हुज़ूर की व्यस्तता को देखकर हैरत होती है कि हुजूर किस प्रकार प्रसन्नता से काम करते हैं।

एक औरत ने कहा कि मेरे यहां औलाद नहीं थी। तीन साल पहले बेटी हुआ है। इस के दिमाग़ में कोई चीड़ है इस का दिमाग़ तरक्की नहीं कर रहा था मैंने हुज़ूर से दुआ का निवेदन किया था जिस पर हुज़ूर ने फरमाया कि अल्लाह फज़ल फरमाए।

एक ग़ैर जमाअत आदमी माहिर साहिब ज़ाती खर्च पर अपनी पत्नी के साथ जलसा में शामिल हुए उन्होंने कहा यहां मेहमानों का जिस प्रकार ध्यान रखा जाता है और जिस मुहब्बत से लोग पेश आते हैं मैं सच्ची बात कहता हूं कि अगर ये लोग हमें ज़मीन पर सोने के लिए कहें और खाने के लिए केवल सूखी रोटी क्यों न दें हमें इन से कोई शिकायत न होगी क्योंकि जो प्यार और मुहब्बत हमें यहां मिला है इस की दुनिया में कोई तुलना नहीं है।

एक अहमदी दोस्त ने हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के सेवा में अपनी एक अंगूठी तबर्रुक के लिए पेश की। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्लेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए यह अंगूठी अपनी अंगुली में पहन कर और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अंगूठी से छुवा कर इस दोस्त को वापस कर दी।

बोस्नियन वफ्द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 6 बज कर 40 मिन्ट तक जारी रही। इस के बाद वफद के मैम्बरों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस प्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को दया करते हुए कलम प्रदान किए। और बच्चों और बच्चियों को चाकलेट प्रदान किए।

मेसोडोनिया

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार मेसेडोनिया के देश से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ के सात मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। इस साल मेसेडोनिया से 65 लोगों पर आधारित वफद जलसा जर्मनी में शामिल हुआ। इसमें 32 ईसाई दोस्त थे, 23 अहमदी और 10 गैर-अहमदी मित्र थे। इन दोस्तों में से एक को पिछले दिनों बैअत का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनमें से एक बड़ी संख्या ने 42 घंटे में मैसिडोनिया से जर्मनी तक का सफर लगभग दो हज़ार किलोमीटर यात्रा बस के माध्यम से पूरी की। इस प्रतिनिधिमंडल में चार विभिन्न क्षेत्रीय टेलीविज़न के प्रतिनिधियों समेत चार अलग-अलग टेलीविजन चैनलों के पांच पत्रकार भी शामिल हुए और एक राष्ट्रीय टेलीविजन के पत्रकार भी शामिल हुए। जिन्होंने हुज़ूर अनवर के संवाददाता सम्मेलन में भी सवाल किए थे। पत्रकारों ने जलसा सालाना के दौरान रिकॉर्डंग भी की और 28 अगस्त को जब हुज़ूर अनवर से मुलाकात हुई तो इस दृश्य की रिकार्डिंग की जिसे वे वृत्त चित्र में दिखाऐगे।

वफद में शामिल एक महिला ने पूछा, " जब आतंकवादी हमला करते हैं तो उस समय ख़ुदा तआला का नाम क्यों लेते हैं?" हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया:" वे गलत करते हैं और गलत काम करने के लिए ईश्वर का उपयोग करते हैं। " ख़ुदा तआला कहता है कि एसा करने पर मैं सज़ा दूंगा। यदि इस दुनिया में नहीं तो, मैं उसे आख़रत में दूँगा जन्नत के स्थान पर जहन्नम ऐसे लोगों का स्थान होगी। ख़ुदा तआला तो कहता है कि लोगों को जाने अकारण नष्ट न करो। बच्चों के साथ माता-पिता की छत्र छाया न छीनो। निर्दोष लोगों को मत मारो अत: ख़ुदा तआला ऐसा अन्याय नहीं चाहता है जो कोई चाहता है और करेगा उसे दंडित किया जाएगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "जब एक फ्रांसीसी पत्रकार ने एक आतंकवादी संगठन से के एक आदमी से जब पूछा कि यह सब क्या है, जो इस्लाम कहते हैं। उसने जवाब दिया कि मैंने कुरान नहीं पढ़ा। मुझे नहीं पता कि इस्लामी की शिक्षा क्या है हम तो वही करते हैं जो हमारे नेता हमें बताते हैं हमें नहीं पता कि बाकी इस्लामी शिक्षा क्या है, अत: यह उनका धर्म है और यह उनका ज्ञान है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "मुसलमानों के लिए दो चीजें ज़रूरी हैं।" एक तो यह कि वह ख़ुदा तआला के अधिकारों को अदा करें और दूसरा यह कि ख़ुदा तआला की सृष्टि का हक अदा करें । अगर ये दोनों चीजें होंगी, तो शांति स्थापित की जा सकती है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad